قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

eParah

فَمَنْ اَظْلَمُ

पारा - 24

بِالصِّدْقِ	وَكَذَّبَ	عَلَى اللّٰهِ	كَذَبَ	مِمَّنْ	اَظْلَمُ	فَمَنْ
सच्चाई को	और झुठलाए	अल्लाह पर	झूठ बोले	उससे जो	बड़ा ज़ालिम है	फिर कौन

وَالَّذِىْ	لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿32﴾	مَثْوًى	فِىْ جَهَنَّمَ	اَلَيْسَ	جَآءَهٗ ؕ	اِذْ
और वो जो	काफ़िरों के लिए	ठिकाना	जहन्नम में	क्या नहीं है	वो आ जाए उसके पास	जब

لَهُمْ	الْمُتَّقُوْنَ ﴿33﴾	هُمُ	اُولٰٓئِكَ	بِهٖٓ	وَصَدَّقَ	بِالصِّدْقِ	جَآءَ
उनके लिए है	जो मुत्तक़ी हैं	वो	यही लोग हैं	उसकी	और उसने तस्दीक़ की	सच्चाई को	लाया

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿34﴾ ۚۖ	جَزٰٓؤُا	ذٰلِكَ	رَبِّهِمْ ؕ	عِنْدَ	يَشَآءُوْنَ	مَّا
नेको कारों का	बदला है	ये	उनके रब के	पास	वो चाहेंगे	जो

اَجْرَهُمْ	وَيَجْزِيَهُمْ	عَمِلُوْا	الَّذِىْ	اَسْوَاَ	عَنْهُمْ	اللّٰهُ	لِيُكَفِّرَ
अज्र उनके	और बदला में दे उन्हें	उन्होंने अमल किए	वो जो	बदतरीन	उनसे	अल्लाह	ताकि दूर कर दे

بِكَافٍ	اللّٰهُ	اَلَيْسَ	يَعْمَلُوْنَ ﴿35﴾	كَانُوْا	الَّذِىْ	بِاَحْسَنِ
काफ़ी	अल्लाह	क्या नहीं है	वो अमल करते	थे वो	वो जो	बेहतरीन

اللّٰهُ	يُّضْلِلِ	وَمَنْ	مِنْ دُوْنِهٖ ؕ	بِالَّذِيْنَ	وَيُخَوِّفُوْنَكَ	عَبْدَهٗ ؕ
अल्लाह	भटका दे	और जिसे	उसके सिवा हैं	उनसे जो	और वो डराते हैं आपको	अपने बंदे को

لَهٗ	فَمَا	اللّٰهُ	يَّهْدِ	وَمَنْ	مِنْ هَادٍ ﴿36﴾ ج	لَهٗ	فَمَا
उसके लिए	तो नहीं	अल्लाह	हिदायत दे	और जिसे	कोई हिदायत देने वाला	उसके लिए	तो नहीं

سَاَلْتَهُمْ	وَلَئِنْ	ذِى انْتِقَامٍ ﴿37﴾	بِعَزِيْزٍ	اللّٰهُ	اَلَيْسَ	مِنْ مُّضِلٍّ ؕ
पूछें आप उनसे	और अलबत्ता अगर	इन्तिक़ाम लेने वाला	बहुत ज़बरदस्त	अल्लाह	क्या नहीं है	कोई भटकाने वाला

اَفَرَءَيْتُمْ	قُلْ	اللّٰهُ ؕ	لَيَقُوْلُنَّ	وَالْاَرْضَ	السَّمٰوٰتِ	خَلَقَ	مَّنْ
क्या फिर देखा तुमने	कह दीजिए	अल्लाह ने	अलबत्ता वो ज़रूर कहेंगे	और ज़मीन को	आसमानों	पैदा किया	किसने

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِضُرٍّ	اللّٰهُ	اَرَادَنِيَ	اِنْ	اللّٰهِ	مِنْ دُوْنِ	تَدْعُوْنَ	مَّا
किसी तकलीफ़ का	अल्लाह	इरादा करे मेरे साथ	अगर	अल्लाह के	सिवाए	तुम पुकारते हो	जिन्हें

هَلْ	بِرَحْمَةٍ	اَرَادَنِيْ	اَوْ	ضُرِّهٖٓ	كٰشِفٰتُ	هُنَّ	هَلْ
क्या	किसी रहमत का	वो इरादा करे मेरे साथ	या	उसकी तकलीफ़ को	दूर करने वाली हैं	वो सब	क्या

يَتَوَكَّلُ	عَلَيْهِ	اللّٰهُ ط	حَسْبِيَ	قُلْ	رَحْمَتِهٖ ط	مُمْسِكٰتُ	هُنَّ
तवक्कल करते है	उसी पर	अल्लाह	काफ़ी है मुझे	कह दीजिए	उसकी रहमत को	रोकने वाली हैं	वो सब

عَامِلٌ ج	اِنِّيْ	عَلٰى مَكَانَتِكُمْ	اعْمَلُوْا	يٰقَوْمِ	قُلْ	الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿38﴾
अमल करने वाला हूं	बेशक मैं	अपनी जगह पर	अमल करो	ऐ मेरी क़ौम	कह दीजिए	तवक्कल करने वाले

وَيَحِلُّ	يُّخْزِيْهِ	عَذَابٌ	يَّاْتِيْهِ	مَنْ	تَعْلَمُوْنَ ﴿39﴾ لا	فَسَوْفَ
और उतरता है	जो रुस्वा कर दे उसे	ऐसा अज़ाब	आता है उसके पास	कौन है	तुम जान लोगे	पस अनक़रीब

الْكِتٰبَ	عَلَيْكَ	اَنْزَلْنَا	اِنَّآ	مُّقِيْمٌ ﴿40﴾	عَذَابٌ	عَلَيْهِ
किताब	आप पर	नाज़िल की हमने	बेशक हम	क़ायम रहने वाला/दाइमी	अज़ाब	उस पर

ضَلَّ	وَمَنْ	فَلِنَفْسِهٖ ج	اهْتَدٰى	فَمَنِ	بِالْحَقِّ ج	لِلنَّاسِ
भटके	और जो कोई	तो उसके अपने ही लिए है	हिदायत पा जाए	तो जो	साथ हक़ के	लोगों के लिए

اَللّٰهُ	بِوَكِيْلٍ ﴿41﴾ ع	عَلَيْهِمْ	اَنْتَ	وَمَآ	عَلَيْهَا ج	يَضِلُّ	فَاِنَّمَا	ع 4 10 1
अल्लाह	कोई ज़िम्मेदार	उन पर	आप	और नहीं	अपने ख़िलाफ़	वो भटकता है	तो बेशक	

فِيْ مَنَامِهَا ج	تَمُتْ	لَمْ	وَالَّتِيْ	مَوْتِهَا	حِيْنَ	الْاَنْفُسَ	يَتَوَفَّى
अपनी नींद में	वो मरें	नहीं	और वो जो	उनकी मौत के	वक़्त पर	जानों को	वो फ़ौत करता है

الْاُخْرٰٓى	وَيُرْسِلُ	الْمَوْتَ	عَلَيْهَا	قَضٰى	الَّتِيْ	فَيُمْسِكُ
दूसरी (रूहों) को	और वो भेज देता है	मौत का	जिस पर	उसने फ़ैसला किया	उसको	पस वो रोक लेता है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿42﴾	لِّقَوْمٍ	لَاٰيٰتٍ	فِيْ ذٰلِكَ	اِنَّ	مُّسَمًّى ؕ	اِلٰٓى اَجَلٍ
जो ग़ौरो फ़िक्र करते हैं	उन लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां हैं	उसमें	बेशक	जो मुक़र्रर है	एक वक़्त तक

كَانُوْا	اَوَلَوْ	قُلْ	شُفَعَآءَ ؕ	اللّٰهِ	مِنْ دُوْنِ	اتَّخَذُوْا	اَمِ
हों वो	क्या भला अगर	कह दीजिए	कुछ सिफ़ारिशी	अल्लाह के	सिवाए	उन्होंने बना रखे हैं	क्या

الشَّفَاعَةُ	لِّلّٰهِ	قُلْ	يَعْقِلُوْنَ ﴿43﴾	وَّلَا	شَيْـًٔا	لَا يَمْلِكُوْنَ
शफ़ाअत/सिफ़ारिश	अल्लाह ही के लिए है	कह दीजिए	वो अक़्ल रखते	और ना	किसी चीज़ की	ना वो मिलकियत रखते

اِلَيْهِ	ثُمَّ	وَالْاَرْضِ ؕ	السَّمٰوٰتِ	مُلْكُ	لَهٗ	جَمِيْعًا ؕ
तरफ़ उसी के	फिर	और ज़मीन की	आसमानों	बादशाहत	उसी के लिए है	सारी की सारी

قُلُوْبُ	اشْمَاَزَّتْ	وَحْدَهُ	اللّٰهُ	ذُكِرَ	وَاِذَا	تُرْجَعُوْنَ ﴿44﴾
दिल	नफ़रत करते हैं	अकेले उसी का	अल्लाह का	ज़िक्र किया जाता है	और जब	तुम लौटाए जाओगे

مِنْ دُوْنِهٖٓ	الَّذِيْنَ	ذُكِرَ	وَاِذَا	بِالْاٰخِرَةِ ۚ	لَا يُؤْمِنُوْنَ	الَّذِيْنَ
उसके अलावा हैं	उनका जो	ज़िक्र किया जाता है	और जब	आख़िरत पर	नहीं वो ईमान लाते	उन लोगों के जो

وَالْاَرْضِ	السَّمٰوٰتِ	فَاطِرَ	اللّٰهُمَّ	قُلِ	يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿45﴾	هُمْ	اِذَا
और ज़मीन के	आसमानों	ऐ पैदा करने वाले	ऐ अल्लाह	कह दीजिए	वो ख़ुश हो जाते है	वो	यकायक

عِبَادِكَ	بَيْنَ	تَحْكُمُ	اَنْتَ	وَالشَّهَادَةِ	الْغَيْبِ	عٰلِمَ
अपने बंदों के	दर्मियान	तू फ़ैसला करेगा	तू ही	और हाज़िर के	ग़ैब	ऐ जानने वाले

ظَلَمُوْا	لِلَّذِيْنَ	اَنَّ	وَلَوْ	يَخْتَلِفُوْنَ ﴿46﴾	فِيْهِ	كَانُوْا	فِيْ مَا
ज़ुल्म किया	उनके लिए जिन्होंने	बेशक हो	और अगर	वो इख़्तिलाफ़ करते	उसमें	हैं वो	उसमें जो

بِهٖ	لَافْتَدَوْا	مَعَهٗ	وَّمِثْلَهٗ	جَمِيْعًا	فِي الْاَرْضِ	مَا
उसे	अलबत्ता वो फ़िदया में दे दें	साथ उसके	और उसकी मानिंद	सब का सब	ज़मीन में है	जो कुछ

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ ؕ	وَ بَدَا	لَهُمْ	مِّنَ اللّٰهِ	مَا
बुरे अज़ाब से (बचने के लिए)	दिन	क़यामत के	और ज़ाहिर हो जाएगा	उनके लिए	अल्लाह की तरफ़ से	जो

لَمْ	يَكُوْنُوْا	يَحْتَسِبُوْنَ ﴿47﴾	وَبَدَا	لَهُمْ	سَيِّاٰتُ	مَا
ना	थे वो	वो गुमान रखते	और ज़ाहिर हो जाएंगी	उनके लिए	बुराईयां	उन (आमाल) की जो

كَسَبُوْا	وَحَاقَ	بِهِمْ	مَّا	كَانُوْا	بِهٖ	يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿48﴾	فَاِذَا	مَسَّ
उन्होंने कमाए	और घेर लेगा	उन्हें	वो जो	थे वो	उसका	वो मज़ाक़ उड़ाते	फिर जब	पहुंचता है

الْاِنْسَانَ	ضُرٌّ	دَعَانَا ز	ثُمَّ	اِذَا	خَوَّلْنٰهُ	نِعْمَةً	مِّنَّا ۙ
इंसान को	कोई नुक़्सान	वो पुकारता है हमें	फिर	जब	हम अता करते हैं उसे	कोई नेअमत	अपने पास से

قَالَ	اِنَّمَآ	اُوْتِيْتُهٗ	عَلٰى عِلْمٍ ؕ	بَلْ	هِىَ	فِتْنَةٌ	وَّلٰكِنَّ
वो कहता है	बेशक	मैं दिया गया हूं उसे	इल्म की बिना पर	बल्कि	वो	एक फ़ितना है	और लेकिन

اَكْثَرَهُمْ	لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿49﴾	قَدْ	قَالَهَا	الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ	فَمَآ
अक्सर उनके	नहीं वो इल्म रखते	तहक़ीक़	कहा था उसे	उन लोगों ने जो	उनसे पहले थे	तो ना

اَغْنٰى	عَنْهُمْ	مَّا	كَانُوْا	يَكْسِبُوْنَ ﴿50﴾	فَاَصَابَهُمْ	سَيِّاٰتُ	مَا
काम आया	उनके	जो	थे वो	वो कमाई करते	तो पहुंची उन्हें	बुराईयां	उन (आमाल) की जो

كَسَبُوْا ؕ	وَالَّذِيْنَ	ظَلَمُوْا	مِنْ هٰٓؤُلَآءِ	سَيُصِيْبُهُمْ	سَيِّاٰتُ
उन्होंने कमाए	और वो जिन्होंने	ज़ुल्म किया	उन लोगों में से	अनक़रीब पहुंचेंगी उन्हें	बुराईयां

مَا	كَسَبُوْا ۙ	وَمَا	هُمْ	بِمُعْجِزِيْنَ ﴿51﴾	اَوَلَمْ	يَعْلَمُوْٓا	اَنَّ
उन (आमाल) की जो	उन्होंने कमाए	और नहीं हैं	वो	आजिज़ करने वाले	क्या भला नहीं	उन्होंने जाना	बेशक

اللّٰهَ	يَبْسُطُ	الرِّزْقَ	لِمَنْ	يَّشَآءُ	وَيَقْدِرُ ؕ	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ
अल्लाह	वो कुशादा कर देता है	रिज़्क़	जिसके लिए	वो चाहता है	और वो तंग कर देता है	बेशक	इसमें

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 5 11 2

لَاٰيٰتٍ	لِّقَوْمٍ	يُّؤْمِنُوْنَ ﴿52﴾ ع	قُلْ	يٰعِبَادِيَ	الَّذِيْنَ	اَسْرَفُوْا
अलबत्ता निशानियां हैं	उन लोगों के लिए	जो ईमान लाते हैं	कह दीजिए	ऐ मेरे बंदों	वो जिन्होंने	ज़्यादती की

عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ	لَا تَقْنَطُوْا	مِنْ رَّحْمَةِ	اللّٰهِ ط	اِنَّ	اللّٰهَ	يَغْفِرُ
अपने नफ़्सों पर	ना तुम मायूस हो	रहमत से	अल्लाह की	बेशक	अल्लाह	वो बख़्श देता है

الذُّنُوْبَ	جَمِيْعًا ط	اِنَّهٗ	هُوَ	الْغَفُوْرُ	الرَّحِيْمُ ﴿53﴾	وَ اَنِيْبُوْٓا
गुनाहों को	सब के सब को	बेशक वो	वो ही है	बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला	और रुजूअ करो

اِلٰى رَبِّكُمْ	وَ اَسْلِمُوْا	لَهٗ	مِنْ قَبْلِ	اَنْ	يَّاْتِيَكُمُ	الْعَذَابُ
तरफ़ अपने रब के	और फ़रमांबरदार बन जाओ	उसके लिए	इससे पहले	कि	आ जाए तुम्हारे पास	अज़ाब

ثُمَّ	لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿54﴾	وَاتَّبِعُوْٓا	اَحْسَنَ	مَآ	اُنْزِلَ	اِلَيْكُمْ
फिर	ना तुम मदद किए जाओ	और पैरवी करो	बेहतरीन की	जो	नाज़िल किया गया	तरफ़ तुम्हारे

مِّنْ رَّبِّكُمْ	مِّنْ قَبْلِ	اَنْ	يَّاْتِيَكُمُ	الْعَذَابُ	بَغْتَةً	وَّ اَنْتُمْ
तुम्हारे रब की तरफ़ से	इससे पहले	कि	आ जाए तुम्हारे पास	अज़ाब	अचानक	और तुम

لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿55﴾ لا	اَنْ	تَقُوْلَ	نَفْسٌ	يّٰحَسْرَتٰى	عَلٰى مَا	فَرَّطْتُّ
ना तुम शऊर रखते हो	(ऐसा ना हो) कि	कहे	कोई नफ़्स	ऐ हसरत	उस पर जो	कमी/कोताही की मैंने

فِيْ جَنْۢبِ	اللّٰهِ	وَاِنْ	كُنْتُ	لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ﴿56﴾ لا	اَوْ	تَقُوْلَ
हक़ में	अल्लाह के	और बेशक	मैं था	अलबत्ता मज़ाक़ उड़ाने वालों में से	या	वो कहे

لَوْ	اَنَّ	اللّٰهَ	هَدٰىنِيْ	لَكُنْتُ	مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿57﴾ لا	اَوْ	تَقُوْلَ
काश	ये कि	अल्लाह	हिदायत देता मुझे	अलबत्ता होता मैं	मुत्तक़ी लोगों में से	या	वो कहे

حِيْنَ	تَرَى	الْعَذَابَ	لَوْ	اَنَّ	لِيْ	كَرَّةً	فَاَكُوْنَ
जिस वक़्त	वो देखे	अज़ाब	काश	ये कि (हो)	मेरे लिए	एक बार पलटना	तो मैं हो जाऊं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿58﴾	بَلٰى	قَدْ	جَآءَتْكَ	اٰيٰتِيْ	فَكَذَّبْتَ	بِهَا
नेको कारों में से	क्यों नहीं	तहक़ीक़	आईं तेरे पास	आयात मेरी	तो झुठला दिया तूने	उन्हें

وَاسْتَكْبَرْتَ	وَكُنْتَ	مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿59﴾	وَيَوْمَ	الْقِيٰمَةِ	تَرَى
और तकब्बुर किया तूने	और था तू	काफ़िरों में से	और दिन	क़यामत के	आप देखेंगे

الَّذِيْنَ	كَذَبُوْا	عَلَى اللّٰهِ	وُجُوْهُهُمْ	مُّسْوَدَّةٌ ؕ	اَلَيْسَ	فِيْ جَهَنَّمَ
उनको जिन्होंने	झूठ बोला	अल्लाह पर	चेहरे उनके	स्याह होंगे	क्या नहीं है	जहन्नम में

مَثْوًى	لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿60﴾	وَيُنَجِّي	اللّٰهُ	الَّذِيْنَ	اتَّقَوْا	بِمَفَازَتِهِمْ ۫
कोई ठिकाना	तकब्बुर करने वालों के लिए	और निजात देगा	अल्लाह	उनको जिन्होंने	तक़वा किया	बवजह उनकी कामयाबी के

لَا يَمَسُّهُمُ	السُّوْٓءُ	وَلَا	هُمْ	يَحْزَنُوْنَ ﴿61﴾	اَللّٰهُ	خَالِقُ	كُلِّ
नहीं पहुंचेगी उन्हें	कोई बुराई	और ना	वो	वो ग़मगीन होंगे	अल्लाह	ख़ालिक़ है	हर

شَيْءٍ ۫	وَّهُوَ	عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ	وَّكِيْلٌ ﴿62﴾	لَهٗ	مَقَالِيْدُ
चीज़ का	और वो	ऊपर	हर	चीज़ के	निगरान है	उसी के लिए हैं	कुंजियां

السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ؕ	وَالَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	بِاٰيٰتِ	اللّٰهِ	اُولٰٓئِكَ
आसमानों	और ज़मीन की	और वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	साथ आयात के	अल्लाह की	यही लोग हैं

هُمُ	الْخٰسِرُوْنَ ﴿63﴾ ع	قُلْ	اَفَغَيْرَ	اللّٰهِ	تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ	اَعْبُدُ
वो	जो नुक़्सान उठाने वाले हैं	कह दीजिए	क्या फिर ग़ैर	अल्लाह के (बारे में)	तुम हुक्म देते हो मुझे	कि मैं इबादत करूं

ع 6 11 3

اَيُّهَا	الْجٰهِلُوْنَ ﴿64﴾	وَلَقَدْ	اُوْحِيَ	اِلَيْكَ	وَاِلَى الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِكَ ۚ
ऐ	जाहिलो	और अलबत्ता तहक़ीक़	वही किया गया	तरफ़ आपके	और तरफ़ उन लोगों के जो	आपसे पहले थे

لَئِنْ	اَشْرَكْتَ	لَيَحْبَطَنَّ	عَمَلُكَ	وَلَتَكُوْنَنَّ	مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿65﴾
अलबत्ता अगर	शिर्क किया आपने	यक़ीनन ज़रूर ज़ाया हो जाएगा	अमल आप का	और यक़ीनन ज़रूर आप हो जाएंगे	नुक़्सान उठाने वालों में से

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

قَدَرُوا	وَمَا	مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿66﴾	وَكُنْ	فَاعْبُدْ	اللّٰهَ	بَلِ
उन्होंने क़द्र की	और नहीं	शुक्रगुज़ारों में से	और हो जाइए	पस आप इबादत कीजिए	अल्लाह ही की	बल्कि

الْقِيٰمَةِ	يَوْمَ	قَبْضَتُهٗ	جَمِيْعًا	وَالْاَرْضُ	قَدْرِهٖ ۖ	حَقَّ	اللّٰهَ
क़यामत के	दिन	उसकी मुट्ठी में होगी	सारी की सारी	और ज़मीन	उसकी क़द्र का	जैसे हक़ था	अल्लाह की

عَمَّا	وَتَعٰلٰى	سُبْحٰنَهٗ	بِيَمِيْنِهٖ ؕ	مَطْوِيّٰتٌۢ	وَالسَّمٰوٰتُ
उससे जो	और वो बुलंदतर है	पाक है वो	उसके दाऐं हाथ में	लिपटे हुए होंगे	और आसमान

فِى السَّمٰوٰتِ	مَنْ	فَصَعِقَ	فِى الصُّوْرِ	وَنُفِخَ	يُشْرِكُوْنَ ﴿67﴾
आसमानों में	जो कोई	तो बेहोश हो जाएगा	सूर में	और फूंका जाएगा	वो शरीक ठहराते हैं

فِيْهِ	نُفِخَ	ثُمَّ	اللّٰهُ ؕ	شَآءَ	مَنْ	اِلَّا	فِى الْاَرْضِ	وَمَنْ
उसमें	फूंका जाएगा	फिर	अल्लाह	चाहे	जिसे	मगर	ज़मीन में (होगा)	और जो कोई

بِنُوْرِ	الْاَرْضُ	وَاَشْرَقَتِ	يَّنْظُرُوْنَ ﴿68﴾	قِيَامٌ	هُمْ	فَاِذَا	اُخْرٰى
नूर से	ज़मीन	और चमक उठेगी	वो देख रहे होंगे	खड़े	वो	तो यकायक	दूसरी मर्तबा

وَقُضِىَ	وَالشُّهَدَآءِ	بِالنَّبِيّٖنَ	وَجِآىْءَ	الْكِتٰبُ	وَوُضِعَ	رَبِّهَا
और फ़ैसला कर दिया जाएगा	और गवाह	अम्बिया	और लाए जाऐंगे	किताब	और रख दी जाएगी	अपने रब के

نَفْسٍ	كُلُّ	وَوُفِّيَتْ	لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿69﴾	وَهُمْ	بِالْحَقِّ	بَيْنَهُمْ
नफ़्स को	हर	और पूरा-पूरा दिया जाएगा	वो ज़ुल्म ना किए जाऐंगे	और वो	साथ हक़ के	दर्मियान उनके

ع 7 7 4

الَّذِيْنَ	وَسِيْقَ	يَفْعَلُوْنَ ﴿70﴾ ع	بِمَا	اَعْلَمُ	وَهُوَ	عَمِلَتْ	مَّا
वो जिन्होंने	और हांके जाऐंगे	वो करते हैं	जो कुछ	ज़्यादा जानता है	और वो	उसने अमल किया	जो

فُتِحَتْ	جَآءُوْهَا	اِذَا	حَتّٰٓى	زُمَرًا ؕ	اِلٰى جَهَنَّمَ	كَفَرُوْٓا
खोल दिए जाऐंगे	वो आ जाऐंगे उसके पास	जब	यहां तक कि	गिरोह दर गिरोह	तरफ़ जहन्नम के	कुफ़्र किया

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِّنْكُمْ	رُسُلٌ	يَاْتِكُمْ	اَلَمْ	خَزَنَتُهَآ	لَهُمْ	وَقَالَ	اَبْوَابُهَا
तुम में से	कुछ रसूल	आए थे तुम्हारे पास	क्या नहीं	दरबान उसके	उन्हें	और कहेंगे	दरवाज़े उसके

يَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ	لِقَآءَ	وَيُنْذِرُوْنَكُمْ	رَبِّكُمْ	اٰيٰتِ	عَلَيْكُمْ	يَتْلُوْنَ
तुम्हारे इस दिन की	मुलाक़ात से	और वो डराते तुम्हें	तुम्हारे रब की	आयात	तुम पर	जो पढ़ते

عَلَى الْكٰفِرِيْنَ (71)	الْعَذَابِ	كَلِمَةُ	حَقَّتْ	وَلٰكِنْ	بَلٰى	قَالُوْا
काफ़िरों पर	अज़ाब की	बात	साबित हो गई	और लेकिन	क्यों नहीं	वो कहेंगे

مَثْوَى	فَبِئْسَ	فِيْهَا ۚ	خٰلِدِيْنَ	جَهَنَّمَ	اَبْوَابَ	ادْخُلُوْٓا	قِيْلَ
ठिकाना	तो कितना बुरा है	इसमें	हमेशा रहने वाले	जहन्नम के	दरवाज़ों में	दाख़िल हो जाओ	कहा जाएगा

اِلَى الْجَنَّةِ	رَبَّهُمْ	اتَّقَوْا	الَّذِيْنَ	وَسِيْقَ	الْمُتَكَبِّرِيْنَ (72)
तरफ़ जन्नत के	अपने रब से	डरे	वो लोग जो	और ले जाए जाऐंगे	तकब्बुर करने वालों का

وَقَالَ	اَبْوَابُهَا	وَفُتِحَتْ	جَآءُوْهَا	اِذَا	حَتّٰٓى	زُمَرًا ؕ
और कहेंगे	दरवाज़े उसके	और खोल दिए जाऐंगे	वो आ जाऐंगे उसके पास	जब	यहां तक कि	गिरोह दर गिरोह

خٰلِدِيْنَ (73)	فَادْخُلُوْهَا	طِبْتُمْ	عَلَيْكُمْ	سَلٰمٌ	خَزَنَتُهَا	لَهُمْ
हमेशा रहने वाले	पस दाख़िल हो जाओ इनमें	तुम अच्छे रहे	तुम पर	सलामती हो	दरबान उसके	उन्हें

وَاَوْرَثَنَا	وَعْدَهٗ	صَدَقَنَا	الَّذِيْ	لِلّٰهِ	الْحَمْدُ	وَقَالُوا
और वारिस बना दिया हमें	वादा अपना	सच्चा किया हमसे	जिसने	अल्लाह के लिए है	सब तारीफ़	और वो कहेंगे

اَجْرُ	فَنِعْمَ	نَشَآءُ ۚ	حَيْثُ	مِنَ الْجَنَّةِ	نَتَبَوَّاُ	الْاَرْضَ
अज्र	तो कितना अच्छा है	हम चाहें	जहां	जन्नत में	हम जगह बना सकते हैं	ज़मीन का

الْعَرْشِ	مِنْ حَوْلِ	حَآفِّيْنَ	الْمَلٰٓئِكَةَ	وَتَرَى	الْعٰمِلِيْنَ (74)
अर्श के	इर्द-गिर्द से	घेरा डाले हुए	फ़रिश्तों को	और आप देखेंगे	अमल करने वालों का

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يُسَبِّحُوْنَ	بِحَمْدِ	رَبِّهِمْ ج	وَقُضِيَ	بَيْنَهُمْ	بِالْحَقِّ
वो तस्बीह कर रहे होंगे	साथ तारीफ़ के	अपने रब की	और फ़ैसला कर दिया जाएगा	दर्मियान उनके	साथ हक़ के

ع 8 5 5

وَقِيْلَ	الْحَمْدُ	لِلّٰهِ	رَبِّ	الْعٰلَمِيْنَ (75) ع
और कह दिया जाएगा	सब तारीफ़	अल्लाह के लिए है	जो रब है	तमाम जहानों का

اٰيَاتُهَا: 85 — 40 سُوْرَةُ الْمُؤْمِنِ مَكِّيَّةٌ 60 — رُكُوْعَاتُهَا: 9

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ (1) ج	تَنْزِيْلُ	الْكِتٰبِ	مِنَ اللّٰهِ	الْعَزِيْزِ	الْعَلِيْمِ (2) لا	غَافِرِ
حٰمٓ	नाज़िल करना है	किताब का	अल्लाह की तरफ़ से	जो बहुत ज़बरदस्त है	ख़ूब इल्म वाला है	बख़्शने वाला है

الذَّنْۢبِ	وَقَابِلِ	التَّوْبِ	شَدِيْدِ	الْعِقَابِ لا	ذِي الطَّوْلِ ط	لَآ
गुनाह का	और क़ुबूल करने वाला है	तौबा का	सख़्त	सज़ा वाला है	बड़े फ़ज़्ल वाला है	नहीं

اِلٰهَ	اِلَّا	هُوَ ط	اِلَيْهِ	الْمَصِيْرُ (3)	مَا	يُجَادِلُ	فِيْٓ اٰيٰتِ
कोई इलाह (बरहक़)	मगर	वो ही	तरफ़ उसी के	लौटना है	नहीं	झगड़ा करते	आयात में

اللّٰهِ	اِلَّا	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	فَلَا	يَغْرُرْكَ	تَقَلُّبُهُمْ	فِي الْبِلَادِ (4)
अल्लाह की	मगर	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	तो ना	धोखे में डाले आपको	चलना फिरना उनका	शहरों में

كَذَّبَتْ	قَبْلَهُمْ	قَوْمُ	نُوْحٍ	وَّالْاَحْزَابُ	مِنْۢ بَعْدِهِمْ ص	وَهَمَّتْ
झुठलाया	उनसे पहले	क़ौमे	नूह ने	और गिरोहों ने	बाद उनके	और इरादा किया

كُلُّ	اُمَّةٍ	بِرَسُوْلِهِمْ	لِيَاْخُذُوْهُ	وَجٰدَلُوْا	بِالْبَاطِلِ
हर	उम्मत ने	अपने रसूल का	ताकि वो पकड़ें उसे	और उन्होंने झगड़ा किया	साथ बातिल के

لِيُدْحِضُوْا	بِهِ	الْحَقَّ	فَاَخَذْتُهُمْ قف	فَكَيْفَ	كَانَ	عِقَابِ (5)
ताकि वो ख़त्म (ज़ाइल) कर दें	साथ उसके	हक़ को	तो पकड़ लिया मैंने उन्हें	तो कैसी	थी	सज़ा मेरी

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَنَّهُمْ	كَفَرُوْٓا	عَلَى الَّذِيْنَ	رَبِّكَ	كَلِمَتُ	حَقَّتْ	وَكَذٰلِكَ
कि यक़ीनन वो	कुफ़्र किया	ऊपर उनके जिन्होंने	आपके रब की	बात	साबित हो गई	और इसी तरह

وقف لازم
وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم

حَوْلَهٗ	وَمَنْ	الْعَرْشَ	يَحْمِلُوْنَ	اَلَّذِيْنَ	النَّارِ ⑥	اَصْحٰبُ
उसके इर्द-गिर्द हैं	और जो	अर्श को	उठाए हुए हैं	वो (फ़रिश्ते) जो	आग के	साथी हैं

وَيَسْتَغْفِرُوْنَ	بِهٖ	وَيُؤْمِنُوْنَ	رَبِّهِمْ	بِحَمْدِ	يُسَبِّحُوْنَ
और वो बख़्शिश मांगते हैं	उस पर	और वो ईमान रखते हैं	अपने रब की	साथ तारीफ़ के	वो तस्बीह कर रहे हैं

وَّعِلْمًا	رَّحْمَةً	شَيْءٍ	كُلَّ	وَسِعْتَ	رَبَّنَا	اٰمَنُوْا ج	لِلَّذِيْنَ
और इल्म से	रहमत	चीज़ को	हर	घेर रखा है तूने	ऐ हमारे रब	ईमान लाए	उनके लिए जो

عَذَابَ	وَقِهِمْ	سَبِيْلَكَ	وَاتَّبَعُوْا	تَابُوْا	لِلَّذِيْنَ	فَاغْفِرْ
अज़ाब से	और बचा उन्हें	तेरे रास्ते की	और उन्होंने पैरवी की	तौबा की	उनको जिन्होंने	पस बख़्श दे

وَعَدْتَّهُمْ	الَّتِيْ	عَدْنِ	جَنّٰتِ	وَاَدْخِلْهُمْ	رَبَّنَا	الْجَحِيْمِ ⑦
वादा किया था तूने उनसे	वो जो	हमेशगी के	बाग़ात में	और दाख़िल कर उन्हें	ऐ हमारे रब	जहन्नम के

اِنَّكَ	وَذُرِّيّٰتِهِمْ ط	وَاَزْوَاجِهِمْ	مِنْ اٰبَآئِهِمْ	صَلَحَ	وَمَنْ
बेशक तू	और उनकी औलादों में से	और उनकी बीवियों	उनके आबा ओ अजदाद में से	नेक हुए	और जो कोई

تَقِ	وَمَنْ	السَّيِّاٰتِ ط	وَقِهِمُ	الْحَكِيْمُ ⑧ لا	الْعَزِيْزُ	اَنْتَ
तू बचा लेगा	और जिसे	बुराईयों से	और बचा उन्हें	ख़ूब हिक्मत वाला	बहुत ज़बरदस्त	तू ही है

الْعَظِيْمُ ⑨ ع	الْفَوْزُ	هُوَ	وَذٰلِكَ	رَحِمْتَهٗ ط	فَقَدْ	يَوْمَئِذٍ	السَّيِّاٰتِ
बहुत बड़ी	कामयाबी	वो	और यही है	रहम किया तूने उस पर	पस तहक़ीक़	उस दिन	बुराईयों से

ع 1 9 6

مِنْ مَّقْتِكُمْ	اَكْبَرُ	اللّٰهِ	لَمَقْتُ	يُنَادَوْنَ	كَفَرُوْا	الَّذِيْنَ	اِنَّ
तुम्हारी नाराज़गी से	ज़्यादा बड़ी है	अल्लाह की	यक़ीनन नाराज़गी	वो पुकारे जाएंगे	कुफ़्र किया	वो जिन्होंने	बेशक

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَنْفُسَكُمْ	اِذْ	تُدْعَوْنَ	اِلَى الْاِيْمَانِ	فَتَكْفُرُوْنَ ⑩	قَالُوْا
अपने आप पर	जब	तुम बुलाए जाते थे	तरफ़ ईमान के	तो तुम इंकार करते थे	वो कहेंगे

رَبَّنَآ	اَمَتَّنَا	اثْنَتَيْنِ	وَ اَحْيَيْتَنَا	اثْنَتَيْنِ	فَاعْتَرَفْنَا
ऐ हमारे रब	मौत दी तू ने हमें	दो बार	और ज़िन्दगी बख़्शी तू ने हमें	दो बार	तो ऐतराफ़ कर लिया हमने

بِذُنُوْبِنَا	فَهَلْ	اِلٰى خُرُوْجٍ	مِّنْ سَبِيْلٍ ⑪	ذٰلِكُمْ	بِاَنَّهٗٓ	اِذَا
अपने गुनाहों का	तो क्या है	तरफ़ निकलने के	कोई रस्ता	ये तुम्हारा (अंजाम)	इसलिए कि	जब

دُعِىَ	اللّٰهُ	وَحْدَهٗ	كَفَرْتُمْ ج	وَ اِنْ	يُّشْرَكْ	بِهٖ	تُؤْمِنُوْا ط
पुकारा जाता	अल्लाह	अकेले उसी को	इन्कार करते थे तुम	और अगर	शरीक ठहराया जाता	साथ उसके	तो तुम मान जाते

فَالْحُكْمُ	لِلّٰهِ	الْعَلِىِّ	الْكَبِيْرِ ⑫	هُوَ	الَّذِىْ	يُرِيْكُمْ	اٰيٰتِهٖ
पस फ़ैसला	अल्लाह ही के लिए है	जो बहुत बुलंद है	बहुत बड़ा है	वो ही है	जो	दिखाता है तुम्हें	निशानियां अपनी

وَ يُنَزِّلُ	لَكُمْ	مِّنَ السَّمَآءِ	رِزْقًا ط	وَمَا	يَتَذَكَّرُ	اِلَّا	مَنْ
और उतारता है	तुम्हारे लिए	आसमान से	रिज़्क़	और नहीं	नसीहत पकड़ता	मगर	वो जो

يُّنِيْبُ ⑬	فَادْعُوا	اللّٰهَ	مُخْلِصِيْنَ	لَهُ	الدِّيْنَ	وَ لَوْ	كَرِهَ
वो रुजूअ करता है	पस पुकारो	अल्लाह को	ख़ालिस करने वाले होकर	उसी के लिए	दीन को	और अगरचे	नापसंद करें

الْكٰفِرُوْنَ ⑭	رَفِيْعُ	الدَّرَجٰتِ	ذُو الْعَرْشِ ج	يُلْقِى	الرُّوْحَ	مِنْ اَمْرِهٖ
काफ़िर	बुलंद	दर्जों वाला है	अर्श वाला है	वो डालता है	वही को	अपने हुक्म से

عَلٰى مَنْ	يَّشَآءُ	مِنْ عِبَادِهٖ	لِيُنْذِرَ	يَوْمَ	التَّلَاقِ ⑮ لا	يَوْمَ
जिस पर	वो चाहता है	अपने बंदों में से	ताकि वो डराए	दिन से	मुलाक़ात के	जिस दिन

هُمْ	بٰرِزُوْنَ ج	لَا يَخْفٰى	عَلَى اللّٰهِ	مِنْهُمْ	شَىْءٌ ط	لِمَنِ
वो	ज़ाहिर होंगे	ना छुपी होगी	अल्लाह पर	उनकी	कोई चीज़	किसके लिए है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْمُلْكُ	الْيَوْمَ ؕ	لِلّٰهِ	الْوَاحِدِ	الْقَهَّارِ (16)	الْيَوْمَ	تُجْزٰى
बादशाहत	आज के दिन	अल्लाह ही के लिए है	जो एक है	सब पर ग़ालिब है	आज के दिन	बदला दिया जाएगा

كُلُّ	نَفْسٍ	بِمَا	كَسَبَتْ ؕ	لَا ظُلْمَ	الْيَوْمَ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ
हर	नफ़्स को	उसका जो	उसने कमाई की	नहीं कोई ज़ुल्म होगा	आज के दिन	बेशक	अल्लाह

سَرِيْعُ	الْحِسَابِ (17)	وَاَنْذِرْهُمْ	يَوْمَ	الْاٰزِفَةِ	اِذِ	الْقُلُوْبُ
जल्द लेने वाला है	हिसाब	और आप डराइए उन्हें	उस दिन से	जो क़रीब आ लगा है	जब	दिल

لَدَى	الْحَنَاجِرِ	كٰظِمِيْنَ ؕ	مَا	لِلظّٰلِمِيْنَ	مِنْ حَمِيْمٍ	وَّلَا
क़रीब (होंगे)	हलक़ के	ग़म से भरे हुए	नहीं	ज़ालिमों के लिए	कोई गहरा दोस्त	और ना

شَفِيْعٍ	يُّطَاعُ ؕ (18)	يَعْلَمُ	خَآئِنَةَ	الْاَعْيُنِ	وَمَا	تُخْفِي
कोई सिफ़ारिशी	जिसकी बात मानी जाए	वो जानता है	ख़यानत	आंखों की	और जो कुछ	छुपाते हैं

الصُّدُوْرُ (19)	وَاللّٰهُ	يَقْضِيْ	بِالْحَقِّ ؕ	وَالَّذِيْنَ	يَدْعُوْنَ	مِنْ دُوْنِهٖ
सीने	और अल्लाह	वो फ़ैसला करता है	साथ हक़ के	और जिन्हें	वो पुकारते हैं	उसके सिवा

لَا يَقْضُوْنَ	بِشَيْءٍ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	هُوَ	السَّمِيْعُ	الْبَصِيْرُ (20) ع
नहीं वो फ़ैसला करते	किसी चीज़ का	बेशक	अल्लाह	वो ही है	ख़ूब सुनने वाला	ख़ूब देखने वाला

ع 2 11 7

اَوَلَمْ	يَسِيْرُوْا	فِي الْاَرْضِ	فَيَنْظُرُوْا	كَيْفَ	كَانَ	عَاقِبَةُ
क्या भला नहीं	वो चले फिरे	ज़मीन में	तो वो देखते	किस तरह	हुआ	अंजाम

الَّذِيْنَ	كَانُوْا	مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ	كَانُوْا	هُمْ	اَشَدَّ	مِنْهُمْ	قُوَّةً
उनका जो	थे	उनसे पहले	थे वो	वो	ज़्यादा शदीद	उनसे	क़ुव्वत में

وَّاٰثَارًا	فِي الْاَرْضِ	فَاَخَذَهُمُ	اللّٰهُ	بِذُنُوْبِهِمْ ؕ	وَمَا	كَانَ
और आसार में	ज़मीन में	पस पकड़ लिया उन्हें	अल्लाह ने	बवजह उनके गुनाहों के	और ना	था

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تَّاْتِيْهِمْ	كَانَتْ	بِاَنَّهُمْ	ذٰلِكَ	مِنْ وَّاقٍ (21)	مِّنَ اللّٰهِ	لَهُمْ
आते उनके पास	थे	बवजह उसके कि वो	ये	कोई बचाने वाला	अल्लाह से	उनके लिए

قَوِيٌّ	اِنَّهٗ	اللّٰهُ ؕ	فَاَخَذَهُمُ	فَكَفَرُوْا	بِالْبَيِّنٰتِ	رُسُلُهُمْ
बहुत क़ुव्वत वाला है	बेशक वो	अल्लाह ने	फिर पकड़ लिया उन्हें	तो उन्होंने इंकार किया	साथ वाज़ेह दलाइल के	रसूल उनके

وَسُلْطٰنٍ	بِاٰيٰتِنَا	مُوْسٰى	اَرْسَلْنَا	وَلَقَدْ	الْعِقَابِ (22)	شَدِيْدُ
और दलील	साथ अपनी निशानियों के	मूसा को	भेजा हमने	और अलबत्ता तहक़ीक़	सज़ा वाला है	सख़्त

سٰحِرٌ	فَقَالُوْا	وَقَارُوْنَ	وَهَامٰنَ	اِلٰى فِرْعَوْنَ	مُّبِيْنٍ (23) ۙ
जादूगर है	तो उन्होंने कहा	और क़ारून के	और हामान	तरफ़ फ़िरऔन	वाज़ेह के

اقْتُلُوْٓا	قَالُوا	مِنْ عِنْدِنَا	بِالْحَقِّ	جَآءَهُمْ	فَلَمَّا	كَذَّابٌ (24)
क़त्ल करो	उन्होंने कहा	हमारे पास से	हक़	वो लाया उनके पास	तो जब	बहुत झूठा

وَمَا	نِسَآءَهُمْ ؕ	وَاسْتَحْيُوْا	مَعَهٗ	اٰمَنُوْا	الَّذِيْنَ	اَبْنَآءَ
और नहीं	उनकी औरतों को	और ज़िंदा रहने दो	साथ उसके	ईमान लाए	उनके जो	बेटों को

اَقْتُلْ	ذَرُوْنِيْٓ	فِرْعَوْنُ	وَقَالَ	فِيْ ضَلٰلٍ (25)	اِلَّا	الْكٰفِرِيْنَ	كَيْدُ
मैं क़त्ल करूं	छोड़ दो मुझे	फ़िरऔन ने	और कहा	गुमराही में	मगर	काफ़िरों की	चाल

دِيْنَكُمْ	يُّبَدِّلَ	اَنْ	اَخَافُ	اِنِّيْٓ	رَبَّهٗ ۚ	وَلْيَدْعُ	مُوْسٰى
तुम्हारे दीन को	वो बदल देगा	कि	मैं डरता हूं	बेशक मैं	अपने रब को	और चाहिए कि वो पुकारे	मूसा को

اِنِّيْ	مُوْسٰٓى	وَقَالَ	الْفَسَادَ (26)	فِي الْاَرْضِ	يُّظْهِرَ	اَنْ	اَوْ
बेशक मैं	मूसा ने	और कहा	फ़साद	ज़मीन में	वो फैला देगा	ये कि	या

بِيَوْمِ	لَّا يُؤْمِنُ	مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ	وَرَبِّكُمْ	بِرَبِّيْ	عُذْتُ
दिन पर	जो नहीं ईमान रखता	हर तकब्बुर करने वाले से	और तुम्हारे रब की	अपने रब की	पनाह ली मैंने

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 3 7 8

الْحِسَابِ ﴿27﴾	وَقَالَ	رَجُلٌ	مُّؤْمِنٌ ۖ	مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ	يَكْتُمُ	اِيْمَانَهٗٓ
हिसाब के	और कहा	एक मर्द	मोमिन ने	आले फ़िरऔन में से	वो छुपाता था	ईमान अपना

اَتَقْتُلُوْنَ	رَجُلًا	اَنْ	يَّقُوْلَ	رَبِّيَ	اللّٰهُ	وَقَدْ	جَآءَكُمْ
क्या तुम क़त्ल कर दोगे	एक आदमी को	कि	वो कहता है	मेरा रब	अल्लाह है	हालांकि तहक़ीक़	वो लाया है तुम्हारे पास

بِالْبَيِّنٰتِ	مِنْ رَّبِّكُمْ ؕ	وَاِنْ	يَّكُ	كَاذِبًا	فَعَلَيْهِ	كَذِبُهٗ ۚ
वाज़ेह दलाइल	तुम्हारे रब की तरफ़ से	और अगर	है वो	झूठा	तो उसी पर है	झूठ उसका

وَاِنْ	يَّكُ	صَادِقًا	يُّصِبْكُمْ	بَعْضُ	الَّذِيْ	يَعِدُكُمْ ؕ	اِنَّ
और अगर	है वो	सच्चा	पहुंचेगा तुम्हें	बाज़	वो जिसका	वो वादा करता है तुमसे	बेशक

اللّٰهَ	لَا يَهْدِيْ	مَنْ	هُوَ	مُسْرِفٌ	كَذَّابٌ ﴿28﴾	يٰقَوْمِ	لَكُمُ
अल्लाह	नहीं वो हिदायत देता	उसे जो हो	वो	हद से गुज़रने वाला	सख़्त झूठा	ऐ मेरी क़ौम	तुम्हारे लिए है

الْمُلْكُ	الْيَوْمَ	ظٰهِرِيْنَ	فِي الْاَرْضِ ز	فَمَنْ	يَّنْصُرُنَا	مِنْۢ بَاْسِ
बादशाहत	आज	कि ग़ालिब हो	ज़मीन में	फिर कौन	मदद करेगा हमारी	अज़ाब से

اللّٰهِ	اِنْ	جَآءَنَا ؕ	قَالَ	فِرْعَوْنُ	مَآ	اُرِيْكُمْ	اِلَّا	مَآ
अल्लाह के	अगर	वो आ गया हमारे पास	कहा	फ़िरऔन ने	नहीं	मैं दिखाता तुम्हें	मगर	जो

اَرٰى	وَمَآ	اَهْدِيْكُمْ	اِلَّا	سَبِيْلَ	الرَّشَادِ ﴿29﴾	وَقَالَ	الَّذِيْٓ
मैं देखता हूं	और नहीं	मैं दिखाता तुम्हें	मगर	रास्ता	भलाई का	और कहा उसने	जो

اٰمَنَ	يٰقَوْمِ	اِنِّيْٓ	اَخَافُ	عَلَيْكُمْ	مِّثْلَ	يَوْمِ	الْاَحْزَابِ ﴿30﴾ لا
ईमान लाया	ऐ मेरी क़ौम	बेशक मैं	मैं डरता हूं	तुम पर	मानिंद	दिन के	(गुज़िश्ता) गिरोहों के

مِثْلَ	دَاْبِ	قَوْمِ	نُوْحٍ	وَّعَادٍ	وَّثَمُوْدَ	وَالَّذِيْنَ	مِنْۢ بَعْدِهِمْ ؕ
मानिंद	हालत	क़ौमे	नूह	और आद	और समूद	और उनकी जो	बाद थे उनके

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَمَا	اللّٰهُ	يُرِيْدُ	ظُلْمًا	لِّلْعِبَادِ ﴿31﴾	وَيٰقَوْمِ	اِنِّيْٓ	اَخَافُ
और नहीं	अल्लाह	इरादा रखता	ज़ुल्म का	बंदों पर	और ऐ मेरी क़ौम	बेशक मैं	मैं डरता हूं

عَلَيْكُمْ	يَوْمَ التَّنَادِ ﴿32﴾ لا	يَوْمَ	تُوَلُّوْنَ	مُدْبِرِيْنَ ج	مَا
तुम पर	एक दूसरे को पुकारने के दिन से	जिस दिन	तुम फिर जाओगे	पीठ फेरते हुए	नहीं (होगा)

لَكُمْ	مِّنَ اللّٰهِ	مِنْ عَاصِمٍ ج	وَمَنْ	يُّضْلِلِ	اللّٰهُ	فَمَا	لَهٗ
तुम्हारे लिए	अल्लाह से	कोई बचाने वाला	और जिसे	भटका दे	अल्लाह	तो नहीं	उसके लिए

مِنْ هَادٍ ﴿33﴾	وَلَقَدْ	جَآءَكُمْ	يُوْسُفُ	مِنْ قَبْلُ	بِالْبَيِّنٰتِ
कोई हिदायत देने वाला	और अलबत्ता तहक़ीक़	आया तुम्हारे पास	यूसुफ़	इससे पहले	साथ वाज़ेह दलाइल के

فَمَا زِلْتُمْ	فِيْ شَكٍّ	مِّمَّا	جَآءَكُمْ	بِهٖ ط	حَتّٰٓى	اِذَا	هَلَكَ
तो मुसलसल रहे तुम	शक में	उस चीज़ से जो	वो लाया तुम्हारे पास	उसे	यहां तक कि	जब	वो फ़ौत हो गया

قُلْتُمْ	لَنْ	يَّبْعَثَ	اللّٰهُ	مِنْ بَعْدِهٖ	رَسُوْلًا ط	كَذٰلِكَ	يُضِلُّ
कहा तुमने	हरगिज़ नहीं	भेजेगा	अल्लाह	उसके बाद	किसी रसूल को	इसी तरह	भटकाता है

اللّٰهُ	مَنْ	هُوَ	مُسْرِفٌ	مُّرْتَابُ ﴿34﴾ صلے	الَّذِيْنَ	يُجَادِلُوْنَ	فِيْٓ اٰيٰتِ
अल्लाह	उसे जो	हो वो	हद से बढ़ने वाला	शक में पड़ने वाला	वो लोग जो	झगड़ते हैं	आयात में

اللّٰهِ	بِغَيْرِ	سُلْطٰنٍ	اَتٰىهُمْ ط	كَبُرَ	مَقْتًا	عِنْدَ	اللّٰهِ
अल्लाह की	बग़ैर	किसी दलील के	जो आई हो उनके पास	बड़ी है	नाराज़गी की बात	नज़दीक	अल्लाह के

وَعِنْدَ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا ط	كَذٰلِكَ	يَطْبَعُ	اللّٰهُ	عَلٰى	كُلِّ
और नज़दीक	उनके जो	ईमान लाए	इसी तरह	मोहर लगा देता है	अल्लाह	ऊपर	हर (उस शख़्स के)

قَلْبِ	مُتَكَبِّرٍ	جَبَّارٍ ﴿35﴾	وَقَالَ	فِرْعَوْنُ	يٰهَامٰنُ	ابْنِ	لِيْ
दिल के	जो तकब्बुर करने वाला है	सरकश है	और कहा	फ़िरऔन ने	ऐ हामान	बना	मेरे लिए

فَاَطَّلِعَ	السَّمٰوٰتِ	اَسْبَابَ	الْاَسْبَابَ ﴿36﴾ لا	اَبْلُغُ	لَّعَلِّيْٓ	صَرْحًا
फिर मैं झांक कर देखूं	आसमान के	रास्तों पर	रास्तों पर	मैं पहुँच सकूं	ताकि मैं	एक बुलंद इमारत

زُيِّنَ	وَكَذٰلِكَ	كَاذِبًا ط	لَاَظُنُّهٗ	وَاِنِّيْ	مُوْسٰى	اِلٰٓى اِلٰهِ
मुज़य्यन कर दिया गया	और इसी तरह	झूठा	अलबत्ता मैं गुमान करता हूं उसे	और बेशक मैं	मूसा के	तरफ़ इलाह

كَيْدُ	وَمَا	عَنِ السَّبِيْلِ ط	وَصُدَّ	عَمَلِهٖ	سُوْٓءُ	لِفِرْعَوْنَ
चाल	और नहीं	रास्ते से	और वो रोक दिया गया	अमल उसका	बुरा	फ़िरऔन के लिए

اتَّبِعُوْنِ	يٰقَوْمِ	اٰمَنَ	الَّذِيْٓ	وَقَالَ	فِيْ تَبَابٍ ﴿37﴾ ع	اِلَّا	فِرْعَوْنَ
पैरवी करो मेरी	ऐ मेरी क़ौम	ईमान लाया	उसने जो	और कहा	हलाकत में	मगर	फ़िरऔन की

ع 4 10 9

الْحَيٰوةُ	هٰذِهِ	اِنَّمَا	يٰقَوْمِ	الرَّشَادِ ﴿38﴾ ج	سَبِيْلَ	اَهْدِكُمْ
ज़िंदगी	ये	बेशक	ऐ मेरी क़ौम	भलाई का	रास्ता	मैं दिखाऊंगा तुम्हें

مَنْ	الْقَرَارِ ﴿39﴾	دَارُ	هِيَ	الْاٰخِرَةَ	وَّاِنَّ	مَتَاعٌ ز	الدُّنْيَا
जिसने	क़रार का	घर है	वो ही	आख़िरत	और बेशक	थोड़ा फ़ायदा है	दुनिया की

عَمِلَ	وَمَنْ	مِثْلَهَا ج	اِلَّا	يُجْزٰٓى	فَلَا	سَيِّئَةً	عَمِلَ
अमल किया	और जिसने	मानिंद उसी के	मगर	वो बदला दिया जाएगा	तो ना	बुरा	अमल किया

يَدْخُلُوْنَ	فَاُولٰٓئِكَ	مُؤْمِنٌ	وَهُوَ	اُنْثٰى	اَوْ	مِّنْ ذَكَرٍ	صَالِحًا
जो दाख़िल होंगे	तो यही लोग हैं	मोमिन हो	जब कि वो	औरत	या	कोई मर्द हो	नेक

لِيْٓ	مَا	وَيٰقَوْمِ	حِسَابٍ ﴿40﴾	بِغَيْرِ	فِيْهَا	يُرْزَقُوْنَ	الْجَنَّةَ
मुझे	क्या है	और ऐ मेरी क़ौम	हिसाब के	बग़ैर	उसमें	वो रिज़्क़ दिए जाएंगे	जन्नत में

لِاَكْفُرَ	تَدْعُوْنَنِيْ	اِلَى النَّارِ ﴿41﴾ ط	وَتَدْعُوْنَنِيْٓ	اِلَى النَّجٰوةِ	اَدْعُوْكُمْ
कि मैं कुफ़्र करूं	तुम बुलाते हो मुझे	तरफ़ आग के	और तुम बुलाते हो मुझे	तरफ़ निजात के	मैं बुलाता हूं तुम्हें

النصف

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عِلْمٌ ۡ	بِهٖ	لِيْ	لَيْسَ	مَا	بِهٖ	وَاُشْرِكَ	بِاللّٰهِ
कोई इल्म	उसका	मुझे	नहीं है	जो	साथ उसके	और मैं शरीक ठहराऊं	साथ अल्लाह के

اَنَّمَا	لَاجَرَمَ	الْغَفَّارِ (42)	الْعَزِيْزِ	اِلَى	اَدْعُوْكُمْ	وَّاَنَا
बेशक	नहीं कोई शक	बहुत बख़्शने वाले के	बहुत ज़बरदस्त के	तरफ़	मैं बुलाता हूं तुम्हें	और मैं

وَلَا	فِي الدُّنْيَا	دَعْوَةٌ	لَهٗ	لَيْسَ	اِلَيْهِ	تَدْعُوْنَنِيْٓ
और ना	दुनिया में	कोई पुकारा जाना	उसके लिए	नहीं है	जिस की तरफ़	तुम बुलाते हो मुझे

هُمْ	الْمُسْرِفِيْنَ	وَاَنَّ	اِلَى اللّٰهِ	مَرَدَّنَآ	وَاَنَّ	فِي الْاٰخِرَةِ
वो ही हैं	जो हद से बढ़ने वाले हैं	और बेशक	तरफ़ अल्लाह के है	पलटना हमारा	और बेशक	आख़िरत में

وَاُفَوِّضُ	لَكُمْ ؕ	اَقُوْلُ	مَآ	فَسَتَذْكُرُوْنَ	النَّارِ (43)	اَصْحٰبُ
और मैं सुपुर्द करता हूं	तुम्हें	मैं कह रहा हूं	जो	पस अनक़रीब तुम याद करोगे	आग के	साथी

فَوَقٰىهُ	بِالْعِبَادِ (44)	بَصِيْرٌ ۢ	اللّٰهَ	اِنَّ	اِلَى اللّٰهِ ؕ	اَمْرِيْٓ
पस बचा लिया उसे	बंदों को	ख़ूब देखने वाला है	अल्लाह	बेशक	तरफ़ अल्लाह के	अपना मामला

سُوْٓءُ	بِاٰلِ فِرْعَوْنَ	وَحَاقَ	مَكَرُوْا	مَا	سَيِّاٰتِ	اللّٰهُ
बुरे	आले फ़िरऔन को	और घेर लिया	उन्होंने मकर किया	उसकी जो	बुराईयों से	अल्लाह ने

وَيَوْمَ	وَّعَشِيًّا ۚ	غُدُوًّا	عَلَيْهَا	يُعْرَضُوْنَ	اَلنَّارُ	الْعَذَابِ (45) ۚ
और जिस दिन	और शाम	सुबह	उस पर	वो पेश किए जाते हैं	आग	अज़ाब ने

وَاِذْ	الْعَذَابِ (46)	اَشَدَّ	اٰلَ فِرْعَوْنَ	اَدْخِلُوْٓا	السَّاعَةُ ۣ	تَقُوْمُ
और जब	अज़ाब में	शदीद तरीन	आले फ़िरऔन को	(कहा जाएगा) कि दाख़िल करो	क़यामत	क़ायम होगी

اسْتَكْبَرُوْٓا	لِلَّذِيْنَ	الضُّعَفٰٓؤُا	فَيَقُوْلُ	فِي النَّارِ	يَتَحَاجُّوْنَ
तकब्बुर किया था	उन से जिन्होंने	कमज़ोर लोग	तो कहेंगे	आग में	वो बाहम झगड़ेंगे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِنَّا	كُنَّا	لَكُمْ	تَبَعًا	فَهَلْ	اَنْتُمْ	مُّغْنُوْنَ	عَنَّا
बेशक हम	थे हम	तुम्हारे	ताबे/पैरवी करने वाले	तो क्या	तुम	दूर करने वाले हो	हम से

نَصِيْبًا	مِّنَ النَّارِ (47)	قَالَ	الَّذِيْنَ	اسْتَكْبَرُوْٓا	اِنَّا	كُلٌّ
कुछ हिस्सा	आग से	कहेंगे	वो जिन्होंने	तकब्बुर किया था	बेशक हम	सब ही

فِيْهَآ	اِنَّ	اللّٰهَ	قَدْ	حَكَمَ	بَيْنَ	الْعِبَادِ (48)	وَقَالَ
उसमें हैं	बेशक	अल्लाह	तहक़ीक़	फ़ैसला कर चुका है	दर्मियान	बंदों के	और कहेंगे

الَّذِيْنَ	فِي النَّارِ	لِخَزَنَةِ	جَهَنَّمَ	ادْعُوْا	رَبَّكُمْ	يُخَفِّفْ
वो लोग जो	आग में (होंगे)	दरबानों से	जहन्नम के	दुआ करो	अपने रब से	वो हल्का कर दे

عَنَّا	يَوْمًا	مِّنَ الْعَذَابِ (49)	قَالُوْٓا	اَوَلَمْ	تَكُ	تَاْتِيْكُمْ
हम से	एक दिन	अज़ाब से	वो कहेंगे	क्या भला नहीं	थे	आए तुम्हारे पास

رُسُلُكُمْ	بِالْبَيِّنٰتِ ؕ	قَالُوْا	بَلٰى ؕ	قَالُوْا	فَادْعُوْا ۚ	وَمَا
रसूल तुम्हारे	साथ वाज़ेह दलाइल के	वो कहेंगे	क्यों नहीं	वो कहेंगे	पस तुम दुआ करो	और नहीं

دُعٰٓؤُا	الْكٰفِرِيْنَ	اِلَّا	فِيْ ضَلٰلٍ (50) ع	اِنَّا	لَنَنْصُرُ	رُسُلَنَا
दुआ	काफ़िरों की	मगर	गुमराही में	बेशक हम	अलबत्ता हम मदद करते हैं	अपने रसूलों की

ع 5 13 10

وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	فِي الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا	وَيَوْمَ	يَقُوْمُ	الْاَشْهَادُ (51) لا
और उनकी जो	ईमान लाए हैं	ज़िंदगी में	दुनिया की	और जिस दिन	खड़े होंगे	गवाह

يَوْمَ	لَا يَنْفَعُ	الظّٰلِمِيْنَ	مَعْذِرَتُهُمْ	وَلَهُمُ	اللَّعْنَةُ	وَلَهُمْ
जिस दिन	ना नफ़ा देगी	ज़ालिमों को	मअज़रत उनकी	और उनके लिए है	लाअनत	और उनके लिए है

سُوْٓءُ	الدَّارِ (52)	وَلَقَدْ	اٰتَيْنَا	مُوْسَى	الْهُدٰى	وَاَوْرَثْنَا
बदतरीन	घर	और अलबत्ता तहक़ीक़	दी हमने	मूसा को	हिदायत	और वारिस बनाया हमने

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لِاُولِی الْاَلْبَابِ (54)	وَّذِكْرٰى	هُدًى	الْكِتٰبَ (53)	بَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ
अक़्ल वालों के लिए	और नसीहत थी	जो हिदायत	किताब का	बनी इस्राईल को

وَسَبِّحْ	لِذَنْۢبِكَ	وَّاسْتَغْفِرْ	حَقٌّ	اللّٰهِ	وَعْدَ	اِنَّ	فَاصْبِرْ
और तस्बीह कीजिए	अपने गुनाह की	और बख़्शिश तलब कीजिए	सच्चा है	अल्लाह का	वादा	बेशक	पस सब्र कीजिए

يُجَادِلُوْنَ	الَّذِيْنَ	اِنَّ	وَالْاِبْكَارِ (55)	بِالْعَشِيِّ	رَبِّكَ	بِحَمْدِ
झगड़ते हैं	वो लोग जो	बेशक	और सुबह के वक़्त	शाम के वक़्त	अपने रब की	साथ हम्द के

فِیْ صُدُوْرِهِمْ	اِنْ	اَتٰىهُمْ ۙ	سُلْطٰنٍ	بِغَيْرِ	اللّٰهِ	فِیْٓ اٰيٰتِ
उनके सीनों में	नहीं	जो आई हो उनके पास	किसी दलील के	बग़ैर	अल्लाह की	आयात में

هُوَ	اِنَّهٗ	بِاللّٰهِ ؕ	فَاسْتَعِذْ	بِبَالِغِيْهِ ۚ	هُمْ	مَّا	كِبْرٌ	اِلَّا
वही है	बेशक वो	अल्लाह की	पस पनाह तलब कीजिए	पहुंचने वाले उसे	वो	नहीं	बड़ाई	मगर

مِنْ خَلْقِ	اَكْبَرُ	وَالْاَرْضِ	السَّمٰوٰتِ	لَخَلْقُ	الْبَصِيْرُ (56)	السَّمِيْعُ
पैदा करने से	ज़्यादा बड़ा है	और ज़मीन का	आसमानों	यक़ीनन पैदा करना	ख़ूब देखने वाला	ख़ूब सुनने वाला

يَسْتَوِی	وَمَا	لَا يَعْلَمُوْنَ (57)	النَّاسِ	اَكْثَرَ	وَلٰكِنَّ	النَّاسِ
बराबर हो सकते	और नहीं	नहीं वो इल्म रखते	लोग	अक्सर	और लेकिन	इंसानों के

وَلَا	الصّٰلِحٰتِ	وَعَمِلُوا	اٰمَنُوْا	وَالَّذِيْنَ	وَالْبَصِيْرُ ۙ	الْاَعْمٰى
और ना	नेक	और उन्होंने अमल किए	ईमान लाए	और वो जो	और देखने वाला	अंधा

لَاٰتِيَةٌ	السَّاعَةَ	اِنَّ	تَتَذَكَّرُوْنَ (58)	قَلِيْلًا مَّا	الْمُسِیْٓءُ ؕ
अलबत्ता आने वाली है	क़यामत	बेशक	तुम नसीहत पकड़ते हो	कितना कम	बदकार

وَقَالَ	لَا يُؤْمِنُوْنَ (59)	النَّاسِ	اَكْثَرَ	وَلٰكِنَّ	فِيْهَا	لَا رَيْبَ
और कहा	नहीं वो ईमान रखते	लोग	अक्सर	और लेकिन	इसमें	नहीं कोई शक

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَسْتَكْبِرُوْنَ	الَّذِيْنَ	اِنَّ	لَكُمْ ۭ	اَسْتَجِبْ	ادْعُوْنِيْٓ	رَبُّكُمُ
तकब्बुर करते हैं	वो जो	बेशक	तुम्हारे लिए	मैं क़ुबूल करुंगा	दुआ करो मुझसे	तुम्हारे रब ने

جَعَلَ	الَّذِيْ	اَللّٰهُ	ع دٰخِرِيْنَ (60)	جَهَنَّمَ	سَيَدْخُلُوْنَ	عَنْ عِبَادَتِيْ
बनाया	वो है जिसने	अल्लाह	ज़लील व ख़्वार हो कर	जहन्नम में	अनक़रीब वो दाख़िल होंगे	मेरी इबादत से

ع 6 10 11

اللّٰهَ	اِنَّ	مُبْصِرًا ۭ	وَالنَّهَارَ	فِيْهِ	لِتَسْكُنُوْا	الَّيْلَ	لَكُمُ
अल्लाह	बेशक	रौशन	और दिन को	उसमें	ताकि तुम सुकून पाओ	रात को	तुम्हारे लिए

لَا يَشْكُرُوْنَ (61)	النَّاسِ	اَكْثَرَ	وَلٰكِنَّ	عَلَى النَّاسِ	لَذُوْ فَضْلٍ
नहीं वो शुक्र करते	लोग	अक्सर	और लेकिन	लोगों पर	अलबत्ता फ़ज़्ल वाला है

اِلَّا	اِلٰهَ	لَآ	شَيْءٍ ۘ	كُلِّ	خَالِقُ	رَبُّكُمْ	اللّٰهُ	ذٰلِكُمُ
मगर	कोई इलाह (बरहक़)	नहीं	चीज़ का	हर	पैदा करने वाला	रब तुम्हारा	अल्लाह	ये है

وقف لازم

بِاٰيٰتِ	كَانُوْا	الَّذِيْنَ	يُؤْفَكُ	كَذٰلِكَ	تُؤْفَكُوْنَ (62)	فَاَنّٰى	هُوَ ۚ
आयात से	हैं वो	वो जो	फेरे जाते हैं	इसी तरह	तुम फेरे जाते हो	तो कहां से	वही

قَرَارًا	الْاَرْضَ	لَكُمُ	جَعَلَ	الَّذِيْ	اَللّٰهُ	يَجْحَدُوْنَ (63)	اللّٰهِ
क़रारगाह	ज़मीन को	तुम्हारे लिए	बनाया	वो है जिसने	अल्लाह	वो इंकार करते	अल्लाह की

وَرَزَقَكُمْ	صُوَرَكُمْ	فَاَحْسَنَ	وَّصَوَّرَكُمْ	بِنَاۗءً	وَّالسَّمَاۗءَ
और उसने रिज़्क़ दिया तुम्हें	सूरतें तुम्हारी	तो उसने अच्छी बनाईं	और उसने सूरतें बनाईं तुम्हारी	छत	और आसमान को

رَبُّ	اللّٰهُ	فَتَبٰرَكَ	رَبُّكُمْ ښ	اللّٰهُ	ذٰلِكُمُ	مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۭ
जो रब है	अल्लाह	पस बाबरकत है	रब तुम्हारा	अल्लाह	ये है	पाकीज़ा चीज़ों से

فَادْعُوْهُ	هُوَ	اِلَّا	اِلٰهَ	لَآ	الْحَيُّ	هُوَ	الْعٰلَمِيْنَ (64)
पस पुकारो उसे	वही	मगर	कोई इलाह (बरहक़)	नहीं	ज़िन्दा है	वो	तमाम जहानों का

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مُخْلِصِيْنَ	لَهُ	الدِّيْنَ ط	اَلْحَمْدُ	لِلّٰهِ	رَبِّ	الْعٰلَمِيْنَ (65)
ख़ालिस करने वाले होकर	उसी के लिए	दीन को	सब तारीफ़	अल्लाह के लिए है	जो रब है	तमाम जहानों का

قُلْ	اِنِّيْ	نُهِيْتُ	اَنْ	اَعْبُدَ	الَّذِيْنَ	تَدْعُوْنَ	مِنْ دُوْنِ
कह दीजिए	बेशक मैं	मैं रोका गया हूं	कि	मैं इबादत करुं	उनकी जिन्हें	तुम पुकारते हो	सिवाए

اللّٰهِ	لَمَّا	جَآءَنِيَ	الْبَيِّنٰتُ	مِنْ رَّبِّيْ ز	وَاُمِرْتُ	اَنْ
अल्लाह के	जब कि	आ गईं मेरे पास	वाज़ेह निशानियां	मेरे रब की तरफ़ से	और हुक्म दिया गया है मुझे	कि

اُسْلِمَ	لِرَبِّ	الْعٰلَمِيْنَ (66)	هُوَ	الَّذِيْ	خَلَقَكُمْ	مِّنْ تُرَابٍ
मैं फ़रमांबरदार हो जाऊँ	रब के लिए	तमाम जहानों के	वो	वो ही है जिसने	पैदा किया तुम्हें	मिट्टी से

ثُمَّ	مِنْ نُّطْفَةٍ	ثُمَّ	مِنْ عَلَقَةٍ	ثُمَّ	يُخْرِجُكُمْ	طِفْلًا
फिर	नुत्फ़े से	फिर	जमे हुए ख़ून से	फिर	वो निकालता है तुम्हें	बच्चा (बनाकर)

ثُمَّ	لِتَبْلُغُوْٓا	اَشُدَّكُمْ	ثُمَّ	لِتَكُوْنُوْا	شُيُوْخًا ج	وَمِنْكُمْ
फिर	ताकि तुम पहुंच जाओ	अपनी जवानी को	फिर	ताकि तुम हो जाओ	बूढ़े	और तुम में से

مَّنْ	يُّتَوَفّٰى	مِنْ قَبْلُ	وَلِتَبْلُغُوْٓا	اَجَلًا	مُّسَمًّى	وَّلَعَلَّكُمْ
कोई है जो	फ़ौत कर दिया जाता है	इससे पहले	और ताकि तुम पहुंचो	एक वक़्त को	मुक़र्रर	और ताकि तुम

تَعْقِلُوْنَ (67)	هُوَ	الَّذِيْ	يُحْيٖ	وَيُمِيْتُ ج	فَاِذَا	قَضٰٓى
तुम अक़्ल से काम लो	वो ही है	जो	ज़िंदा करता है	और वो मौत देता है	फिर जब	वो फ़ैसला करता है

اَمْرًا	فَاِنَّمَا	يَقُوْلُ	لَهٗ	كُنْ	فَيَكُوْنُ (68) ع	اَلَمْ	تَرَ
किसी काम का	तो बेशक	वो कहता है	उसे	हो जा	तो वो हो जाता है	क्या नहीं	आपने देखा

ع 7 8 12

اِلَى الَّذِيْنَ	يُجَادِلُوْنَ	فِيْٓ اٰيٰتِ	اللّٰهِ ط	اَنّٰى	يُصْرَفُوْنَ (69) ج صلے	الَّذِيْنَ
तरफ़ उनके जो	झगड़ते हैं	आयात में	अल्लाह की	कहां से	वो फेरे जाते हैं	वो जिन्होंने

معانقة 13

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَسَوْفَ	رُسُلَنَا ۚ قف	بِهٖ	اَرْسَلْنَا	وَبِمَآ	بِالْكِتٰبِ	كَذَّبُوْا
तो अनक़रीब	अपने रसूलों को	साथ उसके	भेजा हमने	और उसे जो	किताब को	झुठलाया

يُسْحَبُوْنَ ﴿71﴾ لا	وَالسَّلٰسِلُ ط	فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ	الْاَغْلٰلُ	اِذِ	يَعْلَمُوْنَ ﴿70﴾ لا
वो घसीटे जाऐंगे	और ज़ंजीरें होंगी	उनकी गर्दनों में	तौक़ होंगे	जब	वो जान लेंगे

لَهُمْ	قِيْلَ	ثُمَّ	يُسْجَرُوْنَ ﴿72﴾ ج	فِي النَّارِ	ثُمَّ	فِي الْحَمِيْمِ ۵
उन्हें	कहा जाएगा	फिर	वो झोंके जाऐंगे	आग में	फिर	खौलते पानी में

ضَلُّوْا	قَالُوْا	اللّٰهِ ط	مِنْ دُوْنِ	تُشْرِكُوْنَ ﴿73﴾ لا	كُنْتُمْ	مَا	اَيْنَ
वो गुम हो गए	वो कहेंगे	अल्लाह के	सिवाए	तुम शरीक ठहराते	थे तुम	वो जिन्हें	कहां हैं

كَذٰلِكَ	شَيْـًٔا ط	مِنْ قَبْلُ	نَّدْعُوْا	نَكُنْ	لَّمْ	بَلْ	عَنَّا
इसी तरह	किसी भी चीज़ को	इससे पहले	हम पुकारते	थे हम	ना	बल्कि	हमसे

تَفْرَحُوْنَ	كُنْتُمْ	بِمَا	ذٰلِكُمْ	الْكٰفِرِيْنَ ﴿74﴾	اللّٰهُ	يُضِلُّ
तुम ख़ुश होते	थे तुम	बवजह उसके जो	ये तुम्हारा (अंजाम)	काफ़िरों को	अल्लाह	भटकाता है

اُدْخُلُوْٓا	تَمْرَحُوْنَ ﴿75﴾ ج	كُنْتُمْ	وَبِمَا	الْحَقِّ	بِغَيْرِ	فِي الْاَرْضِ
दाख़िल हो जाओ	तुम इतराते	थे तुम	और बवजह उसके जो	हक़ के	बग़ैर	ज़मीन में

الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿76﴾	مَثْوَى	فَبِئْسَ	فِيْهَا ج	خٰلِدِيْنَ	جَهَنَّمَ	اَبْوَابَ
तकब्बुर करने वालों का	ठिकाना	तो कितना बुरा है	उसमें	हमेशा रहने वाले	जहन्नम के	दरवाज़ों में

بَعْضَ	نُرِيَنَّكَ	فَاِمَّا	حَقٌّ ج	اللّٰهِ	وَعْدَ	اِنَّ	فَاصْبِرْ
बाज़	हम दिखाऐं आपको	फिर अगर	सच्चा है	अल्लाह का	वादा	बेशक	पस सब्र कीजिए

وَلَقَدْ	يُرْجَعُوْنَ ﴿77﴾	فَاِلَيْنَا	نَتَوَفَّيَنَّكَ	اَوْ	نَعِدُهُمْ	الَّذِيْ
और अलबत्ता तहक़ीक़	वो लौटाए जाऐंगे	तो तरफ़ हमारे ही	हम फ़ौत कर दें आपको	या	हम वादा करते हैं उनसे	वो चीज़ जो

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلَيْكَ	قَصَصْنَا	مَّنْ	مِنْهُمْ	مِّنْ قَبْلِكَ	رُسُلًا	اَرْسَلْنَا
आप पर	बयान किया हमने	जिन्हें	उनमें से बाज़ वो हैं	आपसे पहले	कई रसूल	भेजे हमने

لِرَسُوْلٍ	كَانَ	وَمَا	عَلَيْكَ ط	نَقْصُصْ	لَّمْ	مَّنْ	وَمِنْهُمْ
किसी रसूल के लिए	है	और नहीं	आप पर	हमने बयान किया	नहीं	जिन्हें	और उनमें से बाज़ वो हैं

اَمْرُ	جَآءَ	فَاِذَا	بِاِذْنِ اللّٰهِ ج	اِلَّا	بِاٰيَةٍ	يَّاْتِيَ	اَنْ
हुक्म	आ गया	फिर जब	अल्लाह के इज़्न से	मगर	कोई निशानी	वो ले आए	कि

ع 8 10 13

اللّٰهُ	الْمُبْطِلُوْنَ ﴿78﴾ ع	هُنَالِكَ	وَخَسِرَ	بِالْحَقِّ	قُضِيَ	اللّٰهِ
अल्लाह	अहले बातिल	उस वक़्त	और ख़सारे में पड़ गए	साथ हक़ के	फ़ैसला कर दिया गया	अल्लाह का

وَمِنْهَا	مِنْهَا	لِتَرْكَبُوْا	الْاَنْعَامَ	لَكُمُ	جَعَلَ	الَّذِيْ
और उनमें से कुछ	उनमे से बाज़ पर	ताकि तुम सवारी करो	मवेशी	तुम्हारे लिए	बनाए	वो है जिसने

حَاجَةً	عَلَيْهَا	وَلِتَبْلُغُوْا	مَنَافِعُ	فِيْهَا	وَلَكُمْ	تَاْكُلُوْنَ ﴿79﴾ ز
हाजत को	उन पर	और ताकि तुम पहुंचो	फ़ायदे हैं	उनमें	और तुम्हारे लिए	तुम खाते हो

اٰيٰتِهٖ ق	وَيُرِيْكُمْ	تُحْمَلُوْنَ ﴿80﴾ ط	وَعَلَى الْفُلْكِ	وَعَلَيْهَا	فِيْ صُدُوْرِكُمْ
निशानियां अपनी	और वो दिखाता है तुम्हें	तुम सवार किए जाते हो	और कश्तियों पर	और उन पर	जो तुम्हारे सीनों में है

فِي الْاَرْضِ	يَسِيْرُوْا	اَفَلَمْ	تُنْكِرُوْنَ ﴿81﴾	اٰيٰتِ اللّٰهِ	فَاَيَّ
ज़मीन में	वो चले फिरे	क्या भला नहीं	तुम इंकार करोगे	अल्लाह की निशानियों का	पस कौन सी

كَانُوْٓا	مِنْ قَبْلِهِمْ ط	الَّذِيْنَ	عَاقِبَةُ	كَانَ	كَيْفَ	فَيَنْظُرُوْا
थे वो	उनसे पहले थे	उन लोगों का जो	अंजाम	हुआ	कैसा	तो वो देखते

اَغْنٰى	فَمَآ	فِي الْاَرْضِ	وَّاٰثَارًا	قُوَّةً	وَّاَشَدَّ	مِنْهُمْ	اَكْثَرَ
काम आया	पस ना	ज़मीन में	और आसार में	क़ुव्वत में	और ज़्यादा शदीद	उनसे	अक्सर

© AL-FURQAN INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

رُسُلُهُمْ	جَآءَتْهُمْ	فَلَمَّا	يَكْسِبُوْنَ (82)	كَانُوْا	مَّا	عَنْهُمْ
रसूल उनके	आए उनके पास	तो जब	वो कमाई करते	थे वो	जो कुछ	उन्हें

بِهِمْ	وَحَاقَ	مِّنَ الْعِلْمِ	عِنْدَهُمْ	بِمَا	فَرِحُوْا	بِالْبَيِّنٰتِ
उन्हें	और घेर लिया	इल्म में से	उनके पास था	उस पर जो	तो वो ख़ुश हुए	साथ वाज़ेह दलाइल के

بَاْسَنَا	رَاَوْا	فَلَمَّا	يَسْتَهْزِءُوْنَ (83)	بِهٖ	كَانُوْا	مَّا
हमारा अज़ाब	उन्होंने देखा	फिर जब	वो मज़ाक़ उड़ाते	जिसका	थे वो	उसने जो

بِهٖ	كُنَّا	بِمَا	وَكَفَرْنَا	وَحْدَهٗ	بِاللّٰهِ	اٰمَنَّا	قَالُوْٓا
साथ उसके	थे हम	उनका जिन्हें	और इंकार किया हमने	अकेले उसी पर	अल्लाह पर	ईमान लाए हम	उन्होंने कहा

لَمَّا	اِيْمَانُهُمْ	يَنْفَعُهُمْ	يَكُ	فَلَمْ	مُشْرِكِيْنَ (84)
जब	ईमान उनका	कि नफ़ा देता उन्हें	था	पस ना	शरीक करते

خَلَتْ	قَدْ	الَّتِيْ	اللّٰهِ	سُنَّتَ	بَاْسَنَا ؕ	رَاَوْا
गुज़र चुका	तहक़ीक़	वो जो	अल्लाह का	तरीक़ा है	अज़ाब हमारा	उन्होंने देखा

الْكٰفِرُوْنَ (85) ع	هُنَالِكَ	وَخَسِرَ	فِيْ عِبَادِهٖ ۚ	ع 9 7 14
काफ़िर	उस वक़्त	और ख़सारे में पड़ गए	उसके बंदो में	

رُكُوْعَاتُهَا : 6 — 61 سُوْرَةُ حٰمٓ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ 41 — اٰيَاتُهَا : 54

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

فُصِّلَتْ	كِتٰبٌ	الرَّحِيْمِ (2) ۚ	مِّنَ الرَّحْمٰنِ	تَنْزِيْلٌ	حٰمٓ (1) ۚ
खोल कर बयान की गई हैं	एक ऐसी किताब	जो निहायत रहम करने वाला है	बहुत मेहरबान की तरफ़ से	नाज़िल करदा है	حٰمٓ

بَشِيْرًا	يَّعْلَمُوْنَ (3) ۙ	لِّقَوْمٍ	عَرَبِيًّا	قُرْاٰنًا	اٰيٰتُهٗ
ख़ुशख़बरी देने वाला	जो इल्म रखते हैं	उन लोगों के लिए	अरबी	क़ुरआन है	आयात उसकी

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَقَالُوْا	لَا يَسْمَعُوْنَ (4)	فَهُمْ	اَكْثَرُهُمْ	فَاَعْرَضَ	وَّنَذِيْرًا ج
और उन्होंने कहा	नहीं वो सुनते	पस वो	उनके अक्सर ने	तो ऐराज़ किया	और डराने वाला

وَقْرٌ	وَفِيْٓ اٰذَانِنَا	اِلَيْهِ	تَدْعُوْنَآ	مِّمَّا	فِيْٓ اَكِنَّةٍ	قُلُوْبُنَا
एक बोझ है	और हमारे कानों में	तरफ़ जिसके	तुम पुकारते हो हमें	उससे जो	पर्दों में हैं	दिल हमारे

الثلثة

عٰمِلُوْنَ (5)	اِنَّنَا	فَاعْمَلْ	حِجَابٌ	وَبَيْنِكَ	وَّمِنْۢ بَيْنِنَا
अमल करने वाले हैं	बेशक हम भी	पस अमल करो	हिजाब है	और दर्मियान तुम्हारे	और दर्मियान हमारे

اَنَّمَآ	اِلَيَّ	يُوْحٰٓى	مِّثْلُكُمْ	بَشَرٌ	اَنَا	اِنَّمَآ	قُلْ
बेशक	मेरी तरफ़	वही की जाती है	तुम जैसा	एक इंसान हूं	मैं	बेशक	कह दीजिए

وَوَيْلٌ	وَاسْتَغْفِرُوْهُ ط	اِلَيْهِ	فَاسْتَقِيْمُوْٓا	وَّاحِدٌ	اِلٰهٌ	اِلٰهُكُمْ
और हलाकत है	और बख़्शिश मांगो उससे	तरफ़ उसके	पस सीधे रहो	एक ही	इलाह है	इलाह तुम्हारा

هُمْ	بِالْاٰخِرَةِ	وَهُمْ	الزَّكٰوةَ	لَا يُؤْتُوْنَ	الَّذِيْنَ	لِّلْمُشْرِكِيْنَ (6) لا
वो	आख़िरत के	और वो	ज़कात	नहीं वो अदा करते	वो जो	मुशरिकों के लिए

لَهُمْ	الصّٰلِحٰتِ	وَعَمِلُوا	اٰمَنُوْا	الَّذِيْنَ	اِنَّ	كٰفِرُوْنَ (7)
उनके लिए	नेक	और उन्होंने अमल किए	ईमान लाए	वो जो	बेशक	इंकारी हैं

ع 1 8 15

بِالَّذِيْ	لَتَكْفُرُوْنَ	اَئِنَّكُمْ	قُلْ	مَمْنُوْنٍ (8) ع	غَيْرُ	اَجْرٌ
उसका जिसने	अलबत्ता तुम कुफ़्र करते हो	क्या बेशक तुम	कह दीजिए	ख़त्म होने वाला	ना	अज्र है

ذٰلِكَ	اَنْدَادًا ط	لَهٗٓ	وَتَجْعَلُوْنَ	فِيْ يَوْمَيْنِ	الْاَرْضَ	خَلَقَ
वो है	कुछ शरीक	उसके लिए	और तुम बनाते हो	दो दिन में	ज़मीन को	पैदा किया

وَبٰرَكَ	مِنْ فَوْقِهَا	رَوَاسِيَ	فِيْهَا	وَجَعَلَ	الْعٰلَمِيْنَ (9) ج	رَبُّ
और बरकत डाली	उसके ऊपर से	पहाड़ों को	उसमें	और उसने गाड़ दिया	तमाम जहानों का	रब

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

سَوَآءً	فِيْٓ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ ؕ	اَقْوَاتَهَا	فِيْهَآ	وَقَدَّرَ	فِيْهَا
बराबर/यकसां हैं	चार दिनों में	उसकी ग़िज़ाओं को	उसमें	और अंदाज़े से रखा	उसमें

فَقَالَ	دُخَانٌ	وَّهِيَ	اِلَى السَّمَآءِ	اسْتَوٰٓى	ثُمَّ	لِّلسَّآئِلِيْنَ (10)
तो उसने कहा	एक धुआं था	और वो	तरफ़ आसमान के	वो मुतावज्जेह हुआ	फिर	सवाल करने वालों के लिए

اَتَيْنَا	قَالَتَآ	كَرْهًا ؕ	اَوْ	طَوْعًا	ائْتِيَا	وَلِلْاَرْضِ	لَهَا
आ गए हम	दोनों ने कहा	नाख़ुशी से	या	ख़ुशी से	दोनों आ जाओ	और ज़मीन से	उससे

وَاَوْحٰى	فِيْ يَوْمَيْنِ	سَمٰوٰتٍ	سَبْعَ	فَقَضٰىهُنَّ	طَآئِعِيْنَ (11)
और उसने वही कर दिया	दो दिनों में	आसमान	सात	तो उसने पूरा बना दिया उन्हें	ख़ुश होकर

بِمَصَابِيْحَ ۖۗ	الدُّنْيَا	السَّمَآءَ	وَزَيَّنَّا	اَمْرَهَا ؕ	فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ
साथ चिराग़ों के	दुनिया को	आसमाने	और मुज़य्यन किया हमने	काम उसका	हर आसमान में

اَعْرَضُوْا	فَاِنْ	الْعَلِيْمِ (12)	الْعَزِيْزِ	تَقْدِيْرُ	ذٰلِكَ	وَحِفْظًا ؕ
वो मुंह मोड़ लें	फिर अगर	ख़ूब इल्म वाले का	बहुत ज़बरदस्त का	अंदाज़ा है	ये	और हिफ़ाज़त के लिए

وَّثَمُوْدَ (13) ؕ	عَادٍ	صٰعِقَةِ	مِّثْلَ	صٰعِقَةً	اَنْذَرْتُكُمْ	فَقُلْ
और समूद की	आद	बिजली की कड़क	मानिंद	बिजली की कड़क से	डराता हूं मैं तुम्हें	तो कह दीजिए

اَلَّا	وَمِنْ خَلْفِهِمْ	مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ	الرُّسُلُ	جَآءَتْهُمُ	اِذْ
कि ना	और उनके पीछे से	उनके आगे से	कई रसूल	आए उनके पास	जब

لَاَنْزَلَ	رَبُّنَا	شَآءَ	لَوْ	قَالُوْا	اللّٰهَ ؕ	اِلَّا	تَعْبُدُوْٓا
अलबत्ता वो उतार देता	रब हमारा	चाहता	अगर	उन्होंने कहा	अल्लाह की	मगर	तुम इबादत करो

عَادٌ	فَاَمَّا	كٰفِرُوْنَ (14)	بِهٖ	اُرْسِلْتُمْ	بِمَآ	فَاِنَّا	مَلٰٓئِكَةً
आद	तो रहे	इन्कार करने वाले हैं	साथ इसके	भेजे गए हो तुम	उसका जो	तो बेशक हम	फ़रिश्ते

لِمَ	لِجُلُوْدِهِمْ	وَقَالُوْا	يَعْمَلُوْنَ (20)	كَانُوْا	بِمَا	وَجُلُوْدُهُمْ
क्यों	अपनी जिल्दों को	और वो कहेंगे	वो अमल करते	थे वो	बवजह उसके जो	और जिल्दें उनकी

كُلَّ	اَنْطَقَ	الَّذِيْٓ	اللّٰهُ	اَنْطَقَنَا	قَالُوْٓا	عَلَيْنَا ؕ	شَهِدْتُّمْ
हर	बुलवाया	वो जिसने	अल्लाह ने	बुलवाया हमें	वो कहेंगी	ख़िलाफ़ हमारे	गवाही दी तुमने

وَمَا	تُرْجَعُوْنَ (21)	وَّاِلَيْهِ	مَرَّةٍ	اَوَّلَ	خَلَقَكُمْ	وَّهُوَ	شَيْءٍ
और नहीं	तुम लौटाए जाओगे	और तरफ़ उसी के	बार	पहली	जिसने पैदा किया तुम्हें	और वो ही है	चीज़ को

وَلَآ	سَمْعُكُمْ	عَلَيْكُمْ	يَّشْهَدَ	اَنْ	تَسْتَتِرُوْنَ	كُنْتُمْ
और ना	कान तुम्हारे	तुम पर	गवाही देंगे	कि	तुम छुपते (इस बात से)	थे तुम

لَا يَعْلَمُ	اللّٰهَ	اَنَّ	ظَنَنْتُمْ	وَلٰكِنْ	جُلُوْدُكُمْ	وَلَا	اَبْصَارُكُمْ
नहीं वो जानता	अल्लाह	बेशक	गुमान किया तुमने	और लेकिन	जिल्दें तुम्हारी	और ना	आंखें तुम्हारी

ظَنَنْتُمْ	الَّذِيْ	ظَنُّكُمُ	وَذٰلِكُمْ	تَعْمَلُوْنَ (22)	مِّمَّا	كَثِيْرًا
गुमान किया तुमने	वो जो	गुमान तुम्हारा	और ये	तुम अमल करते हो	उसमें से जो	बहुत कुछ

يَّصْبِرُوْا	فَاِنْ	مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ (23)	فَاَصْبَحْتُمْ	اَرْدٰىكُمْ	بِرَبِّكُمْ
वो सब्र करें	फिर अगर	ख़सारा पाने वालों में से	तो हो गए तुम	उसने हलाक कर दिया तुम्हें	अपने रब के बारे में

هُمْ	فَمَا	يَّسْتَعْتِبُوْا	وَاِنْ	لَّهُمْ ۚ	مَثْوًى	فَالنَّارُ
वो	तो नहीं	वो माफ़ी तलब करेंगे	और अगर	उनके लिए	ठिकाना है	तो आग

لَهُمْ	فَزَيَّنُوْا	قُرَنَآءَ	لَهُمْ	وَقَيَّضْنَا	مِّنَ الْمُعْتَبِيْنَ (24)
उनके लिए	तो उन्होंने ख़ुशनुमा बना दिया	कुछ साथी	उनके लिए	और मुक़र्रर किए हमने	उज़्र क़ुबूल किए जाने वालों में से

الْقَوْلُ	عَلَيْهِمُ	وَحَقَّ	خَلْفَهُمْ	وَمَا	بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ	مَّا
बात	उन पर	और साबित हो गई	उनके पीछे था	और जो कुछ	उनके सामने था	जो कुछ

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَاسْتَكْبَرُوْا	فِي الْاَرْضِ	بِغَيْرِ	الْحَقِّ	وَقَالُوْا	مَنْ	اَشَدُّ
पस उन्होंने तकब्बुर किया	ज़मीन में	बग़ैर	हक़ के	और उन्होंने कहा	कौन	ज़्यादा शदीद है

مِنَّا	قُوَّةً ؕ	اَوَلَمْ	يَرَوْا	اَنَّ	اللّٰهَ	الَّذِيْ	خَلَقَهُمْ
हमसे	क़ुव्वत में	क्या भला नहीं	उन्होंने देखा	बेशक	अल्लाह	वो है जिसने	पैदा किया उन्हें

هُوَ	اَشَدُّ	مِنْهُمْ	قُوَّةً ؕ	وَكَانُوْا	بِاٰيٰتِنَا	يَجْحَدُوْنَ (15)
वो	ज़्यादा शदीद है	उनसे	क़ुव्वत में	और थे वो	हमारी आयात का	वो इंकार करते

فَاَرْسَلْنَا	عَلَيْهِمْ	رِيْحًا	صَرْصَرًا	فِيْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ	لِّنُذِيْقَهُمْ
तो भेजी हमने	उन पर	एक हवा	तुंद व तेज़	नहूसत के दिनों में	ताकि हम चखाऐं उन्हें

عَذَابَ	الْخِزْيِ	فِي الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا ؕ	وَلَعَذَابُ	الْاٰخِرَةِ	اَخْزٰى
अज़ाब	रुस्वाई का	ज़िंदगी में	दुनिया की	और यक़ीनन अज़ाब	आख़िरत का	ज़्यादा रुस्वाकुन है

وَهُمْ	لَا يُنْصَرُوْنَ (16)	وَاَمَّا	ثَمُوْدُ	فَهَدَيْنٰهُمْ	فَاسْتَحَبُّوا
और वो	ना वो मदद किए जाऐंगे	और रहे	समूद	तो हिदायत दी हमने उन्हें	तो उन्होंने पसंद किया

الْعَمٰى	عَلَى الْهُدٰى	فَاَخَذَتْهُمْ	صٰعِقَةُ	الْعَذَابِ الْهُوْنِ	بِمَا
अंधेपन को	हिदायत पर	तो पकड़ लिया उन्हें	बिजली की कड़क ने	ज़िल्लत वाले अज़ाब की	बवजह उसके जो

ع 2 10 16

كَانُوْا	يَكْسِبُوْنَ ج (17)	وَنَجَّيْنَا	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَكَانُوْا	يَتَّقُوْنَ ع (18)
थे वो	वो कमाई करते	और निजात दी हमने	उन्हें जो	ईमान लाए	और थे वो	वो डरते

وَيَوْمَ	يُحْشَرُ	اَعْدَآءُ	اللّٰهِ	اِلَى النَّارِ	فَهُمْ	يُوْزَعُوْنَ (19)
और जिस दिन	इकट्ठे किए जाऐंगे	दुश्मन	अल्लाह के	तरफ़ आग के	तो वो	वो रोके जाऐंगे

حَتّٰٓى	اِذَا مَا	جَآءُوْهَا	شَهِدَ	عَلَيْهِمْ	سَمْعُهُمْ	وَاَبْصَارُهُمْ
यहां तक कि	जैसे ही	वो आऐंगे उसके पास	गवाही देंगे	ख़िलाफ़ उनके	कान उनके	और निगाहें उनकी

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فِيْٓ اُمَمٍ	قَدْ	خَلَتْ	مِنْ قَبْلِهِمْ	مِّنَ الْجِنِّ	وَالْاِنْسِ ج	اِنَّهُمْ
उम्मतों में	तहक़ीक़	जो गुज़र चुकीं	उनसे पहले	जिन्नों में से	और इंसानों में से	बेशक वो

ع 3 7 17

كَانُوْا	خٰسِرِيْنَ ع 25	وَقَالَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	لَا تَسْمَعُوْا	لِهٰذَا
थे वो	ख़सारा पाने वाले	और कहा	उन लोगों ने जिन्होंने	कुफ़्र किया	ना तुम सुनो	इस

الْقُرْاٰنِ	وَالْغَوْا	فِيْهِ	لَعَلَّكُمْ	تَغْلِبُوْنَ 26	فَلَنُذِيْقَنَّ
क़ुरआन को	बल्कि ग़ुल मचाओ	इसमें	ताकि तुम	तुम ग़ालिब आ जाओ	पस अलबत्ता हम ज़रूर चखाऐंगे

الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	عَذَابًا	شَدِيْدًا لا	وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ	اَسْوَاَ
उनको जिन्होंने	कुफ़्र किया	अज़ाब	शदीद	और अलबत्ता हम ज़रूर बदला देंगे उन्हें	बदतरीन

الَّذِيْ	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ 27	ذٰلِكَ	جَزَآءُ	اَعْدَآءِ	اللّٰهِ	النَّارُ ج
उसका जो	थे वो	वो अमल करते	ये	बदला है	दुश्मनों का	अल्लाह के	आग का

لَهُمْ	فِيْهَا	دَارُ	الْخُلْدِ ط	جَزَآءً ۢ	بِمَا	كَانُوْا	بِاٰيٰتِنَا
उनके लिए है	उसमें	घर	हमेशगी का	बदला है	बवजह उसके जो	थे वो	हमारी आयात का

يَجْحَدُوْنَ 28	وَقَالَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	رَبَّنَآ	اَرِنَا	الَّذَيْنِ
वो इन्कार करते	और कहेंगे	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	ऐ हमारे रब	दिखा हमें	वो दोनों जिन्होंने

اَضَلّٰنَا	مِنَ الْجِنِّ	وَالْاِنْسِ	نَجْعَلْهُمَا	تَحْتَ	اَقْدَامِنَا
भटकाया हमें	जिन्नों में से	और इन्सानों में से	हम कर दें उन दोनों को	नीचे	अपने क़दमों के

لِيَكُوْنَا	مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ 29	اِنَّ	الَّذِيْنَ	قَالُوْا	رَبُّنَا	اللّٰهُ
ताकि वो दोनों हो जाऐं	सबसे निचलों में से	बेशक	वो जिन्होंने	कहा	रब हमारा	अल्लाह है

ثُمَّ	اسْتَقَامُوْا	تَتَنَزَّلُ	عَلَيْهِمُ	الْمَلٰٓئِكَةُ	اَلَّا	تَخَافُوْا
फिर	उन्होंने इस्तिक़ामत इख़्तियार की	उतरते हैं	उन पर	फ़रिश्ते	कि ना	तुम डरो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَلَا	تَحْزَنُوْا	وَاَبْشِرُوْا	بِالْجَنَّةِ	الَّتِيْ	كُنْتُمْ	تُوْعَدُوْنَ (30)
और ना	तुम ग़म करो	और ख़ुश हो जाओ	साथ जन्नत के	वो जो	थे तुम	तुम वादा दिए जाते

نَحْنُ	اَوْلِيٰٓؤُكُمْ	فِي الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا	وَفِي الْاٰخِرَةِ ج	وَلَكُمْ	فِيْهَا
हम	दोस्त हैं तुम्हारे	ज़िंदगी में	दुनिया की	और आख़िरत में	और तुम्हारे लिए	उसमें

مَا	تَشْتَهِيْٓ	اَنْفُسُكُمْ	وَلَكُمْ	فِيْهَا	مَا	تَدَّعُوْنَ (31) ط	نُزُلًا
वो है जो	चाहेंगे	नफ़्स तुम्हारे	और तुम्हारे लिए	उसमें	वो है जो	तुम तलब करोगे	मेहमानी है

مِّنْ غَفُوْرٍ	رَّحِيْمٍ (32) ع	وَمَنْ	اَحْسَنُ	قَوْلًا	مِّمَّنْ	دَعَآ
बहुत बख़्शने वाले की तरफ़ से	निहायत रहम करने वाले की	और कौन	ज़्यादा अच्छा है	बात में	उससे जो	बुलाए

ع 4 7 18

اِلَى اللّٰهِ	وَعَمِلَ	صَالِحًا	وَّقَالَ	اِنَّنِيْ	مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ (33)	وَلَا
तरफ़ अल्लाह के	और वो अमल करे	नेक	और वो कहे	बेशक मैं	मुसलमानों में से हूं	और नहीं

تَسْتَوِي	الْحَسَنَةُ	وَلَا	السَّيِّئَةُ ط	اِدْفَعْ	بِالَّتِيْ	هِيَ	اَحْسَنُ
बराबर हो सकती	नेकी	और ना	बुराई	दूर कीजिए	साथ उस (तरीक़े) के जो	वो	सब से अच्छा है

فَاِذَا	الَّذِيْ	بَيْنَكَ	وَبَيْنَهٗ	عَدَاوَةٌ	كَاَنَّهٗ	وَلِيٌّ	حَمِيْمٌ (34)
तो यकायक	वो जो	दर्मियान आपके	और दर्मियान उसके	अदावत है	गोया कि वो	दोस्त है	निहायत गहरा

وَمَا	يُلَقّٰىهَآ	اِلَّا	الَّذِيْنَ	صَبَرُوْا ج	وَمَا	يُلَقّٰىهَآ	اِلَّا
और नहीं	डाला जाता उसे	मगर	उन पर जिन्होंने	सब्र किया	और नहीं	डाला जाता उसे	मगर

ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ (35)	وَاِمَّا	يَنْزَغَنَّكَ	مِنَ الشَّيْطٰنِ	نَزْغٌ
बड़े नसीब वाले पर	और अगर	वसवसा आए आपको	शैतान की तरफ़ से	कोई वसवसा

فَاسْتَعِذْ	بِاللّٰهِ ط	اِنَّهٗ	هُوَ	السَّمِيْعُ	الْعَلِيْمُ (36)	وَمِنْ اٰيٰتِهِ
पस पनाह मांग लीजिए	अल्लाह की	बेशक वो	वो ही है	ख़ूब सुनने वाला	ख़ूब जानने वाला	और उसकी निशानियों में से है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَلَّيْلُ	وَالنَّهَارُ	وَالشَّمْسُ	وَالْقَمَرُ ؕ	لَا تَسْجُدُوْا	لِلشَّمْسِ	وَلَا
रात	और दिन	और सूरज	और चांद	ना तुम सज्दा करो	सूरज को	और ना

لِلْقَمَرِ	وَاسْجُدُوْا	لِلّٰهِ	الَّذِيْ	خَلَقَهُنَّ	اِنْ	كُنْتُمْ	اِيَّاهُ
चांद को	बल्कि सज्दा करो	अल्लाह ही को	वो जिसने	पैदा किया उन्हें	अगर	हो तुम	सिर्फ़ उसी की

تَعْبُدُوْنَ (37)	فَاِنِ	اسْتَكْبَرُوْا	فَالَّذِيْنَ	عِنْدَ	رَبِّكَ	يُسَبِّحُوْنَ
तुम इबादत करते	फिर अगर	वो तकब्बुर करें	तो वो जो	पास हैं	आपके रब के	वो तस्बीह करते हैं

السجدة 11

لَهٗ	بِالَّيْلِ	وَالنَّهَارِ	وَهُمْ	لَا يَسْــَٔمُوْنَ (38) السجدة	وَمِنْ اٰيٰتِهِ	اَنَّكَ
उसकी	रात	और दिन	और वो	नहीं वो उकताते	और उसकी निशानियों में से है	बेशक आप

تَرَى	الْاَرْضَ	خَاشِعَةً	فَاِذَآ	اَنْزَلْنَا	عَلَيْهَا	الْمَآءَ	اهْتَزَّتْ
आप देखते हैं	ज़मीन को	दबी हुई	फिर जब	उतारते हैं हम	उस पर	पानी	वो तरो ताज़ा हो जाती है

وَرَبَتْ ؕ	اِنَّ	الَّذِيْٓ	اَحْيَاهَا	لَمُحْيِ	الْمَوْتٰى ؕ	اِنَّهٗ	عَلٰى
और वो उभर आती है	बेशक	वो जिसने	ज़िंदा किया उसे	अलबत्ता ज़िंदा करने वाला है	मुर्दों को	बेशक वो	ऊपर

كُلِّ	شَيْءٍ	قَدِيْرٌ (39)	اِنَّ	الَّذِيْنَ	يُلْحِدُوْنَ	فِيْٓ اٰيٰتِنَا
हर	चीज़ के	ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है	बेशक	वो जो	इल्हाद करते हैं	हमारी आयात में

لَا يَخْفَوْنَ	عَلَيْنَا ؕ	اَفَمَنْ	يُّلْقٰى	فِي النَّارِ	خَيْرٌ	اَمْ	مَّنْ
नहीं वो छुप सकते	हम पर	क्या फिर वो जो	डाला जाएगा	आग में	बेहतर है	या	वो जो

يَّاْتِيْٓ	اٰمِنًا	يَّوْمَ	الْقِيٰمَةِ ؕ	اِعْمَلُوْا	مَا	شِئْتُمْ ۙ	اِنَّهٗ
आएगा	अमन में	दिन	क़यामत के	अमल करो	जो	चाहो तुम	बेशक वो

بِمَا	تَعْمَلُوْنَ	بَصِيْرٌ (40)	اِنَّ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	بِالذِّكْرِ
उसे जो	तुम अमल करते हो	ख़ूब देखने वाला है	बेशक	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	ज़िक्र (क़ुरआन) का

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْبَاطِلُ	لَّا يَاْتِيْهِ	عَزِيْزٌ ۙ (41)	لَكِتٰبٌ	وَ اِنَّهٗ	جَآءَهُمْ ۚ	لَمَّا
बातिल	नहीं आ सकता उस पर	बहुत ज़बरदस्त	अलबत्ता एक किताब है	और बेशक वो	वो आया उनके पास	जब

مِّنْ حَكِيْمٍ	تَنْزِيْلٌ	مِنْ خَلْفِهٖ ؕ	وَلَا	مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ
हिकमत वाले की तरफ़ से	नाज़िल करदा है	उसके पीछे	और ना	उसके सामने से

لِلرُّسُلِ	قِيْلَ	قَدْ	مَا	اِلَّا	لَكَ	يُقَالُ	مَا	حَمِيْدٍ (42)
रसूलों से	कहा गया	तहक़ीक़	वो जो	मगर	आप से	कहा जाता	नहीं	बहुत तारीफ़ वाले

اَلِيْمٍ (43)	وَّ ذُوْ عِقَابٍ	لَذُوْ مَغْفِرَةٍ	رَبَّكَ	اِنَّ	مِنْ قَبْلِكَ ؕ
दर्दनाक	और सज़ा देने वाला है	अलबत्ता बख़्शिश वाला है	रब आपका	बेशक	आपसे पहले

فُصِّلَتْ	لَوْلَا	لَّقَالُوْا	اَعْجَمِيًّا	قُرْاٰنًا	جَعَلْنٰهُ	وَ لَوْ
खोल कर बयान की गईं	क्यों ना	अलबत्ता वो कहते	अजमी	क़ुरआने	बनाते हम उसे	और अगर

اٰمَنُوْا	لِلَّذِيْنَ	هُوَ	قُلْ	وَّ عَرَبِيٌّ ؕ	ءَ اَعْجَمِيٌّ	اٰيٰتُهٗ ؕ
ईमान लाए	उनके लिए जो	वो	कह दीजिए	और अरबी (रसूल)	क्या अजमी (किताब)	आयात उसकी

وَّهُوَ	وَقْرٌ	فِيْٓ اٰذَانِهِمْ	لَا يُؤْمِنُوْنَ	وَالَّذِيْنَ	وَّ شِفَآءٌ ؕ	هُدًى
और वो	बोझ है	उनके कानों में	नहीं वो ईमान लाते	और वो जो	और शिफ़ा है	हिदायत

وَ لَقَدْ	بَعِيْدٍ (44) ع	مِنْ مَّكَانٍۭ	يُنَادَوْنَ	اُولٰٓئِكَ	عَمًى ؕ	عَلَيْهِمْ
औल अलबत्ता तहक़ीक़	दूर की	जगह से	जो पुकारे जाते हैं	यही लोग हैं	अंधापन है	उन पर

كَلِمَةٌ	وَ لَوْلَا	فِيْهِ ؕ	فَاخْتُلِفَ	الْكِتٰبَ	مُوْسَى	اٰتَيْنَا
एक बात	और अगर ना होती	उसमें	पस इख़्तिलाफ़ किया गया	किताब	मूसा को	दी हमने

لَفِيْ شَكٍّ	وَ اِنَّهُمْ	بَيْنَهُمْ ؕ	لَقُضِيَ	مِنْ رَّبِّكَ	سَبَقَتْ
अलबत्ता शक में हैं	और बेशक वो	दर्मियान उनके	अलबत्ता फ़ैसला कर दिया जाता	आपके रब की तरफ़ से	जो पहले हो चुकी

قرء حفص بتسهيل الهمزة الثانية 12

ع 5 12 19

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَمَنْ	فَلِنَفْسِهٖ	صَالِحًا	عَمِلَ	مَنْ	مُرِيْبٍ (45)	مِّنْهُ
और जिसने	तो अपने ही लिए है	नेक	अमल किया	जिसने	बेचैन करने वाले	उसकी तरफ़ से

لِّلْعَبِيْدِ (46)	بِظَلَّامٍ	رَبُّكَ	وَمَا	فَعَلَيْهَا ط	اَسَآءَ
बंदों पर	कुछ भी ज़ुल्म करने वाला	रब आपका	और नहीं	तो उसी पर है	बुरा किया

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION